हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, अप्रैल 21, 2024

11 इनेलो से भाजपा में शामिल हुई महिलाओं का किया स्वागत

12 शौर्य, नेहा व रिया का किया अभिनंदन

खबर संक्षेप

फंदे पर लटका मिला प्रवासी युवक का शव

बहादुरगढ़। उत्तर प्रदेश मूल के एक युवक का शव बहादुरगढ़ में संदिग्ध परिस्थितियों में फंद पर लटका हुआ मिला। मृतक की पहचान करीब 25 वर्षीय टिंकू के रूप में हुई है। मूल रूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। पिछले कुछ समय से यहां छोटूराम नगर में रह रहा था। प्राइवेट जॉब करता था। जानकारी के अनुसार, बीती रात को खाना खाकर वह अपने कमरे में सोया था। परिजनों की नजर पड़ी तो उन्होंने संभाला लेकिन देर हो चुकी थी। अस्पताल लेकर पहुंचे तो चिकित्सकों ने मौत की पुष्टि कर दी। सूचना मिलने पर लाइनपार थाने से पुलिस अस्पताल में पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू कराई।

आज जिले में अनाज मंडियां रहेंगी बंद, किसानों को नहीं मिलेंगे गेट पास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

- मार्केट कमेटी सचिव ने की किसानों से अनाजमंडी में फसल न लेकर आने की अपील

सरसों व गेहूं की फसल की बंपर आवक के कारण अनाजमंडी में जगह-जगह फसलों की ढेरियां लगी है। मंडी में लगे फसलों के अंबार के कारण किसानों को ट्रैक्टर-ट्रालियां लाने-ले जाने में भी परेशानी आ रही है। हालांकि जेसीबी की सहायता से फसलों के ढेर को और अधिक ऊंचाकर रास्ता दुरुस्त किया जा रहा है लेकिन फसल की निरंतर आवक के कारण स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। मार्केट कमेटी सचिव सविता सैनी की ओर से जारी पत्र में बताया गया कि अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा द्वारा जारी आदेशानुसार झज्जर, मातनहेल व बादली खरीद केंद्र को पूर्ण बंद करने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे रविवार को अपनी फसल लेकर अनाजमंडी न पहुंचें। उनके गेटपास जारी नहीं किए जाएंगे। आदेशों की अवहेलना करने वाले लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

झज्जर। अनाज मंडी में लगी गेहूं की ढेरियों ऊंचा करते हुए जेसीबी।

समय पर गाड़ी खाली न होने से धीमा उठान

हैफेड मैनेजर साधुराम ने बताया कि अब तक झज्जर मंडी से सरसों का 85 हजार क्विंटल व आठ हजार क्विंटल गेहूं का उठान हो चुका है। काफी बार ऐसा होता है कि मंडी में ट्रांसपोर्ट की कोई गाड़ी नहीं मिल पाती। जिस वजह से उठान काफी धीमा पड़ जाता है। मंडी में आढ़ती लेबर से गेहूं, सरसों के बैग तो समय से तैयार करवा रहे है। लेकिन गोदाम भेजने के बाद गाड़ी खाली होने में अधिक समय लग रहा है। जिस वजह से उठान कार्य में तेजी नहीं आ पा रही।

उठान कार्य में गति देने के दिए निर्देश

झज्जर :मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद ने राज्य में फसल आवक-खरीद-उठान को लेकर प्रदेश स्तरीय समीक्षात्मक बैठक लेते हुए फसल उठान में तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक के उपरांत डीसी कैप्टन शक्ति सिंह ने उठान कार्य में तेजी लाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि जिले में अभी तक 57 हजार 623 हजार मीट्रिक टन गेहूं की खरीद हो चुकी है और 14 हजार 792 हजार मीट्रिक टन गेहूं का उठान भी हो चुका है।

देशोरी धर्म कारज की तैयारियां जोरों पर

बहादुरगढ़। कार्यक्रम के लिए लड्डू बनाने में जुटी महिलाएं व तैयारियों का जायजा लेते विभिन्न खापों के प्रतिनिधि। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

लोवा कलां 17 खाप के पूर्व प्रधान स्व श्रीचंद मान की स्मृति में आयोजित होने वाले देशोहरी धर्म कारज की तैयारियां जोरों पर है। हलवाइयों की पकवान बनाने में जुटी हुई है। पालम-360 और लोवा-17 खाप के प्रतिनिधियों की देखरेख में देशभर से आने वाले लोगों के अभूतपूर्व स्वागत की तैयारियां भी की जा रही है। सिद्दीपुर लोवा कलां गांव में इस्सरहेड़ी रोड़ पर 10 एकड़ के फॉर्म में टैंट लगाने का काम लगभग पूरा हो चुका है।

- स्व. श्रीचांद मान की स्मृति में सोमवार को आयोजित होने वाले कारज से पहले रविवार को होगी खिचड़ी की रस्म

बता दें कि लोवा सत्रह खाप के प्रधान अशोक मान की अगुवाई में देशभर की खापों, तपों को चिट्ठी भेजकर निमंत्रण भी दिया जा चुका है। स्व. श्रीचंद मान की स्मृति में 22 अप्रैल को आयोजित हो रहे देशोरी धर्म कारज में देशभर से खाप प्रतिनिधि, राजनेता, धार्मिक गुरु और समाजसेवियों के साथ हजारों लोगों के आने की उम्मीद है। इसी हिसाब से तैयारियां की जा रही हैं। कारज की तैयारियों के बीच पिछले कई दिनों से यज्ञ चल रहा है। कारज से ठीक एक दिन पहले शाम को खिचड़ी का कार्यक्रम किया जाता है। देशोहरी धर्म के ठीक अगले दिन हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में मान परिवार की तरफ से 62 वां हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाएगा। गुरुकुल की कन्याओं द्वारा यज्ञ के बाद लोगों के लिए देशी घी का खुला भंडारा भी लगाया जाएगा। पूर्व सरपंच सिकंदर मान ने अपने पिता स्व श्रीचंद मान की स्मृतियां सांझा की।

लोवा सतरह के प्रधान अशोक मान ने कहा कि पिता से मिले समाज-पर्यावरण की सेवा करने के संस्कारों को वे भावी पीढ़ी तक पहुंचा रहे हैं।

जसौरखेड़ी कॉलेज की छात्राओं को दी डिग्रियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

- राजकीय महिला महाविद्यालय में हुआ प्रथम दीक्षांत एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

जसौरखेड़ी के राजकीय महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षांत समारोह एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ की प्राचार्या अल्का गुलाटी ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। कार्यक्रम में वर्ष 2020-2021 से 2021-22 तक की छात्राओं को डिग्रियां प्रदान की। डिग्री प्राप्त करने वाली छात्राओं को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। दीप प्रज्जवलन और सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। छात्राओं ने स्वागत गीत गाया।

बहादुरगढ़। जसौरखेड़ी कॉलेज में छात्राओं को डिग्री प्रदान करती प्रिंसिपल व अन्य। फोटो : हरिभूमि

महाविद्यालय के प्रथम पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि अल्का गुलाटी ने छात्राओं को कर्म में विश्वास रखते हुए प्रत्येक परिस्थिति में कर्म करते रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि हर परिस्थिति में कर्तव्य का निर्वहन उचित प्रकार से करने पर फल भी उसी प्रकार मिलता है। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनिल कुमारी ने कॉलेज की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। समारोह में महाविद्यालय की प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष की छात्राओं को शैक्षणिक क्षेत्र में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। छात्रा संजना, कनिशा, करुणा व नेहा ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम में पंजाबी व हरियाणवी संस्कृति की झलक बिखेरी। मंच संचालन डॉ. ऊषा कुमारी ने किया। महाविद्यालय रजिस्ट्रार डॉ सुनैना व अजय कुमार ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के सफल बनाने में संदीप, डॉ. सुनील कुमारी व डॉ. सुनील कुमार का विशेष सहयोग रहा।

कंटेनर की चपेट से डंपर चालक की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

केएमपी एक्सप्रेस वे पर आसौदा में दर्दनाक हादसा हो गया। यहां एक कंटेनर ने डंपर चालक का कुचल दिया। मौके पर ही उसकी जान चली गई। इस संबंध में फिलहाल आसौदा थाने में अज्ञात कंटेनर चालक के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया है।

मृतक की पहचान करीब 30 वर्षीय इस्लाम के रूप में हुई है। सोनीपत जिले के एक गांव का रहने वाला था। पेशे से चालक था। जानकारी के अनुसार, इस्लाम और उसका साथ दीपक निवासी शामली अपने-अपने डंपर में मिट्टी भरकर धनकोट गुरुग्राम के लिए चले थे। देर रात को आसौदा केएमपी पर फ्लाईओवर के निकट इन्होंने अपनी गाड़ियां रोक दी। गाड़ियां सड़क किनारे खड़ी करके टायरों में फंसी रोड़ियां निकाल रहे थे। इसी दौरान पीछे से एक कैंटर आया और इस्लाम को रौंद कर आगे बढ़ गया। सिर, चेहरा कुचले जाने के कारण मौके पर ही इस्लाम की जान चली गई। जब तक दूसरा चालक दीपक कुछ समझ पाता, देर हो चुकी थी। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पाकर आसौदा थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू कराई गई। शव को बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में रखवाया गया। इसके बाद इस्लाम के बड़े भाई के बयान लिए और शनिवार को पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी गई।

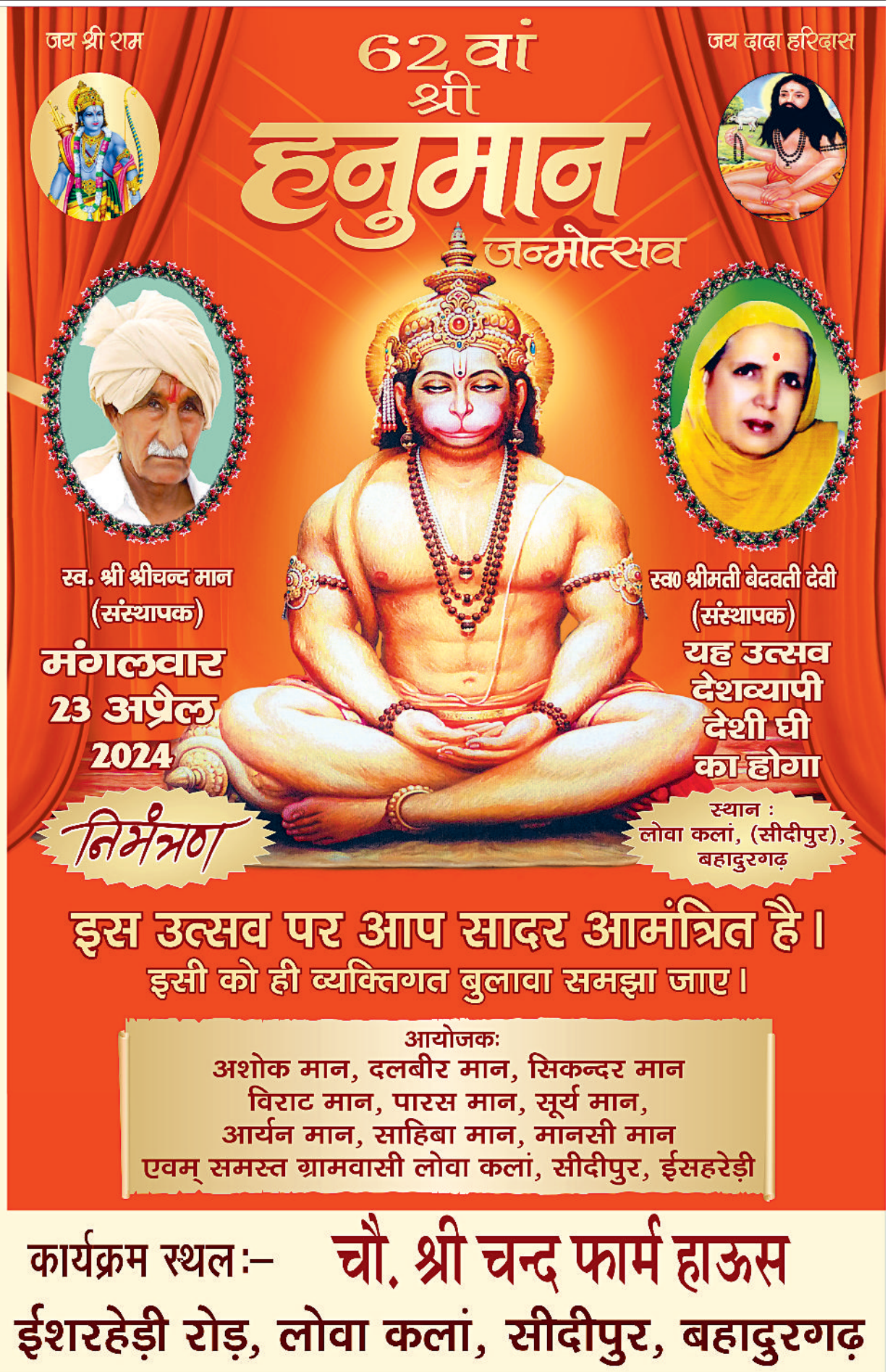

गजब की रहेगी सोने की चाल कर सकता है खूब मालामाल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

तीन महीने में 15% की छलांग, निवेशकों की जमकर कमाई

पिछले कुछ समय में सोना सबसे बढ़िया एसेट क्लास के तौर पर उभरा है। तीन महीने में इस पीली धातु की कीमतें 15 फीसदी तक बढ़ी हैं। यही, नहीं आरबीआई सहित कई उभरते देशों के केंद्रीय बैंक सोने की खरीद में जुटे हैं। सोने को सबसे सुरक्षित निवेश विकल्प के तौर पर माना जाता है। इसमें निवेश कर आप भी मलामाल हो सकते हैं। वैसे भी विशलेषक और सर्राफा बाजार के जानकार इसे निवेश के लिए बढ़िया बता रहे हैं।

जैसे जैसे सोना चमकमता जा रहा है यह निवेशकों को भी खूब भा रहा है। विशलेषकों और सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि इस साल सोना बढ़िया कमाई करवा सकता है। इसकी चाल तेज रहेगी। यह निवेशकों पर खूब पैसे बरसा सकता है। ऐसे में सोने में निवेश आपकी संपत्ति को बढ़ाने में सहायक होगा। वैसे भी निवेशक फर्मों का कहना है कि आपके पोर्टफोलियों में कम से कम 20 फीसदी गोल्ड होना ही चाहिए। यह आपको हर स्थिति से उभारने में मदद कर सकता है। पिछले तीन महीनों में सोना 15% से ज्यादा बढ़ा है। 2024 की शुरुआत से यह सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास के तौर पर उभरा है। पिछले तीन महीनों में कई बातों के चलते पीली धातु के दाम ऊपर गए हैं। क्या चमकीली धातु में यह तेजी आगे भी जारी रहेगी? निवेशकों को क्या करना चाहिए? इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको देंगे ऐसी ही जानकारी की क्या ईरान-इजराइल टेंशन के बीच सोने में निवेश का सही समय है। आप किस तरह से सोने में निवेश का बढ़िया रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे ही तमाम सवालों के जवाब इस रिपोर्ट में आपको मिलेंगे।

कई देशों के बैंक खरीद रहे सोना

इस समय भारत और चीन सहित उभरते देशों के केंद्रीय बैंक बीते कुछ महीनों से लगातार सोने की खरीद में जुटे हुए हैं। इसने सोने की कीमतों को मजबूती दी है। सोना पोर्टफोलियो में विविधता लाने और महंगाई से बचाव के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इसे सबसे सुरक्षित निवेश विकल्प माना जाता है। इसलिए आप भी इसमें लंबी अवधी के लिए निवेश कर सकते हैं और बुढ़ापे के लिए अच्छा पैसा बचा सकते हैं।

मुश्किल समय में बढ़ते हैं दाम

युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और प्राकृतिक आपदाएं जैसी वैश्विक घटनाओं पर सोने की कीमतों पर असर पड़ता है। मुश्किल समय में सोने की कीमतों में अक्सर बढ़त देखने को मिलती है। जब अर्थव्यवस्था अनिश्चित होती है तो भी सोने की कीमतें आमतौर पर बढ़ जाती हैं। कारण है कि इसे सुरक्षित विकल्प माना जाता है।

निवेशकों को क्या करना चाहिए

बीते कुछ समय में सोने में निवेश करने वालों के पास मुस्कुराने का कारण रहा है। पिछले तीन महीनों में पीली धातु में 15% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। यह कैलेंडर वर्ष में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास में उभरी है। विश्लेषकों को उम्मीद है कि सोने में और तेजी आएगी। कारण है कि कीमती धातु को रफ्तार देने वाले कई फैक्टर पॉजिटिव हैं। इनमें ऊंची महंगाई दर, प्रमुख केंद्रीय बैंकों की ओर से मौद्रिक नीति में नरमी की संभावनाएं और मध्य पूर्व और यूक्रेन में भू-राजनीतिक तनाव शामिल हैं।

सोने में निवेश के तरीके

फिजिकल गोल्ड

सोने की सलाखें और सिक्के: यह सोने में निवेश करने का सबसे पारंपरिक तरीका है। आप अलग-अलग आकारों और शुद्धता स्तरों में सोने की सलाखें और सिक्के खरीद सकते हैं।

सोने की जूलरी: आप सोने की जूलरी में भी निवेश कर सकते हैं, जैसे कि हार, कंगन और अंगूठियां। हालांकि, ध्यान रखें कि जूलरी में सोने की शुद्धता कम होती है और इसका मूल्य निवेश उद्देश्यों के लिए सोने की तुलना में कम होता है।

पेपर गोल्ड

सोने में निवेश करने वाले म्यूचुअल फंड: ये म्यूचुअल फंड सोने की सलाखों और सिक्कों में निवेश करते हैं। यह उन लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प है जो भौतिक सोने को स्टोर करने और उसका बीमा करने की परेशानी से बचना चाहते हैं।

गोल्ड एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड (ईटीएफ): ये ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करते हैं और आपको सोने की सलाखों या सिक्कों के बिना सोने में निवेश करने की अनुमति देते हैं।

गोल्ड फ्यूचर एंड ऑप्शन: ये अनुबंध आपको भविष्य में सोने की एक निश्चित कीमत पर खरीदने या बेचने का अधिकार देते हैं।

डिजिटल गोल्ड

सोने में निवेश करने वाले ऐप्स: कई ऐप्स आपको अपने स्मार्टफोन के जरिये सोने में निवेश करने की अनुमति देती हैं। आप छोटी मात्रा में भी सोना खरीद सकते हैं और इसे आसानी से बेच सकते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी: *कुछ क्रिप्टोकरेंसी जैसे कि पाई (पीआई) और डीजीएक्स (डीजीएक्स) सोने से समर्थित हैं। सोने में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका आपकी व्यक्तिगत परिस्थितियों और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करता है। निवेश करने से पहले आपको अपनी रिसर्च करनी चाहिए और विभिन्न विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।*

डीएसपी म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अगली कुछ तिमाहियों में सोना, चांदी और अन्य कीमती धातुओं में तेजी बनी रह सकती है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि सोना अच्छी स्थिति में है। अगर महंगाई की दर ऊंची रहती है तो इसमें बढ़ोतरी होगी। कीमतें कम हो जाती हैं और ब्याज दरों में कटौती होती है तो भी सोना अच्छा प्रदर्शन करेगा। कारण है कि जियो-पॉलिटिकल टेंशन सोने की कीमतों को हवा दे रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म नहीं हुआ। इस बीच ईरान और इजरायल के बीच भी तनाव बढ़ गया है। इनसे सोने की कीमतों को बल मिलेगा।

टैक्स कैसे लगता है

मल्टी-कैप फंड्स पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स लगता है। उनके ऊपर पूंजीगत लाभ के हिसाब से टैक्स लगता है। एक साल से कम समय के लिए रखे गए फंड से हुई कमाई पर 15% टैक्स लगाया जाता है, और एक साल से ज्यादा समय तक रखे गए फंड से हुई कमाई के मामले में 1 लाख रुपये से अधिक के लाभ पर 10% टैक्स लगाया जाता है। इसका मतलब है कि हर साल 1 लाख रुपये तक का लाभ छूट प्राप्त है। टैक्स की गणना 1 लाख रुपये से ज्यादा की रकम के हिसाब से की जाती है।

मल्टी-कैप फंड्स ने 1 साल में दिया 52% का रिटर्न, एसआईपी से जुटा सकते हैं मोटा फंड

सुझाव
बिजनेस डेस्क

मल्टी-कैप एक प्रकार का इक्विटी म्यूचुअल फंड है, यह लार्ज, मिड और स्मॉल-कैप कंपनियों में करता है निवेश, मल्टी-कैप फंड में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में 25-25% हिस्सा रखना होगा

मल्टी-कैप म्यूचुअल फंड एक प्रकार का इक्विटी म्यूचुअल फंड है, जो लार्ज, मिड और स्मॉल-कैप कंपनियों समेत अलग-अलग बाजार पूंजीकरण वाले शेयरों के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करता है। बाजार पूंजीकरण से किसी कंपनी के आकार और उसके मूल्य का पता चलता है। अगर आप कम जोखिम के साथ किसी ऐसी स्कीम में निवेश करना चाहते हैं जहां आपको एफडी से ज्यादा रिटर्न मिले तो आप म्यूचुअल फंड की मल्टी-कैप स्कीम्स ने निवेश कर सकते हैं। इस कैटेगरी में एसआईपीके जरिये निवेश कर मोटा फंड बनाया जा सकता है। इस कैटेगिरी के फंड्स ने बीते 1 साल में 52% तक का रिटर्न दिया है। सेबी के नए नियमों के अनुसार मल्टी-कैप फंड में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में 25-25% हिस्सा रखना होगा। फंड मैनेजर को न्यूनतम 75% इक्विटी और इक्विटी ओरिएंटेड फंड में निवेश रखना होगा।

मल्टी कैप फंड के प्रकार

लार्ज-कैप फोकस्ड फंड : ये इक्विटी फंड लार्ज-कैप फंडों में अधिक निवेश करते हैं, जबकि बाकी संपत्तियां मिड और स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश की जाती हैं। चूंकि वे लार्ज-कैप शेयरों की ओर अधिक झुकाव रखते हैं, इस कारण वे तुलनात्मक तौर पर कम वृद्धि करा सकते हैं।

मिड-कैप या स्मॉल-कैप फोकस्ड फंड: ये इक्विटी फंड मिड और स्मॉल-कैप शेयरों को अधिक वेटेज देते हैं, जबकि बाकी का निवेश लार्ज-कैप शेयरों में किया जाता है। इस कारण वे पूंजी को बढ़ाने की ज्यादा संभावना के साथ ज्यादा जोखिम वाले हो सकते हैं।

इसे ऐसे समझें

मान लीजिए फंड मैनेजर के पास निवेशकों का कुल 100 रुपये हैं। यहां फंड मैनेजर को न्यूनतम 75 रुपये इक्विटी और इक्विटी ओरिएंटेड फंड में निवेश करना होगा। जिसमें 25-25 रुपये लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में लगाना होगा। बाकी बचे हुए 25 रुपये फंड मैनेजर अपने हिसाब से निवेश कर सकते हैं।

इनमें रहता है कम जोखिम

यदि आप इक्विटी फंड्स में इन्वेस्ट करना चाहते हैं, लेकिन ज्यादा-रिस्की एक्सपोजर लेना नहीं चाहते, तो आप टॉप-रेटेड मल्टी-कैप फंड्स में इन्वेस्ट कर सकते हैं। मार्केट कैपिटलाइजेशन के हिसाब से ये फंड्स अच्छी तरह डाइवर्सिफाइड भी होते हैं। ये फंड्स, मार्केट के स्थिर रहने पर, स्मॉल और मिड-कैप फंड्स की तुलना में कम रिटर्न दे सकते हैं लेकिन अस्थिर मार्केट कंडीशन में ये फंड्स कम रिस्की होते हैं। इसलिए, यदि आप एक ऐसा फंड चाहते हैं जिसमें कम रिस्क हो तो आप मल्टी-कैप फंड्स आपके लिए सही इन्वेस्टमेंट चॉइस हो सकता है।

किसे निवेश करना चाहिए

निवेशक जो इक्विटी में निवेश करना चाहते हैं, लेकिन बहुत अधिक जोखिम नहीं लेना चाहते हैं, इन फंड्स में निवेश कर सकते हैं। पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाइ करने का ये अच्छा ऑप्शन है। जो निवेशक एक ही पोर्टफोलियो में जोखिम और अस्थिरता के बीच संतुलन बनाना चाहते हैं, वे भी मल्टी-कैप फंड्स का विकल्प चुन सकते हैं।

एसआईपी के जरिए निवेश करना रहेगा सही

म्यूचुअल फंड में एक साथ पैसा लगाने की बजाय सिस्टमेंटिक इनवेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी के जरिए निवेश करना चाहिए। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक निश्चित अमाउंट इसमें लगाते हैं। इससे रिस्क और कम हो जाता है क्योंकि इससे इस पर बाजार के उतार चढ़ाव का ज्यादा असर नहीं पड़ता। इसके अलावा एसआईपी के जरिए आप आसानी से बड़ा फंड भी तैयार कर सकेंगे।

- ईएलएसएस स्कीम में मिलता है टैक्स बेनिफिट भी
- कई टॉप इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम्स टॉप पर रही
- ईएलएसएस भी निवेश का अच्छा विकल्प हो रहे

ईएलएसएस फंडों ने 5 वर्ष में 34% तक रिटर्न दिया

फैक्ट
बिजनेस डेस्क

पेश की कई टॉप इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम (ईएलएसएस) ने पिछले 5 से 10 साल के दौरान शानदार रिटर्न दिए हैं। इनमें से कुछ फंड्स का औसत सालाना रिटर्न तो करीब 25 से 34% तक रहा है। इतना ही नहीं, ईएलएसएस पर मिलने वाला टैक्स बेनिफिट इनमें निवेश को और भी आकर्षक बना देता है। इसलिए इसमें निवेश करना फायदे का सौदा है। आप भी ईएलएसएस में निवेश कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ईएलएसएस ऐसे म्यूचुअल फंड्स हैं, जिनमें मुख्यतौर पर इक्विटी में निवेश किया जाता है। इस समय इक्विटी निवेशकों की पहली पसंद बनी बना हुआ है। चूंकि इसमे निवेश कर लोग अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

ईएलएसएस पर क्या हैं टैक्स बेनिफिट

टैक्स सेविंग इनवेस्टमेंट के लिहाज से इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम (ईएलएसएस) निवेश का अच्छा विकल्प हो सकते हैं। टैक्स सेविंग ईएलएसएस में हर साल 1.5 लाख रुपये तक लगाने पर सेक्शन 80सी के तहत टैक्स छूट मिलती है। इस इनवेस्टमेंट को कम से कम 3 साल तक बनाए रखने के बाद निकाला जाए, तो एक फाइनेंशियल इयर के दौरान 1 लाख रुपये तक का प्रॉफिट लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन (एलटीसीजी) माना जाता है, जिस पर टैक्स नहीं लगता। मुनाफा 1 लाख रुपये से ज्यादा होने पर भी टैक्स पेयर के स्लैब की बजाय 10% की दर से एलटीसीजी टैक्स देना होता है। अच्छी बात यह है कि ईएलएसएस में सिर्फ टैक्स बचाने के लिए ही नहीं, बेहतर रिटर्न के लिए भी निवेश किया जा सकता है, जिसकी गवाही आंकड़े देते हैं।

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 34.79%
- 5 साल में रिटर्न : 34.36%
- 10 साल में रिटर्न: 27.28%

एसबीआई लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड

- 3 साल में रिटर्न : 27.21%
- 5 साल में रिटर्न : 22.66%
- 10 साल में रिटर्न : 18.11%

एयूएम : 21,754.29 करोड़ रुपये

एचडीएफसी ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 26.30%
- 5 साल में रिटर्न: 19.28%
- 10 साल में रिटर्न: 16.81%

एयूएम : 14,140.23 करोड़ रुपये

बैंक ऑफ इंडिया ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न: 25.37%
- 5 साल में रिटर्न: 27.00%
- 10 साल में रिटर्न: 20.55%
- एयमएम : 1,181.57 करोड़ रुपये

बंधन ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 23.43%
- 5 साल में रिटर्न: 22.06%
- 10 साल में रिटर्न:19.89%

एयूएम : 6,234.18 करोड़ रुपये

डीएसपी ईएलएसएस टक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 21.36%
- 5 साल में रिटर्न: 21.40%
- 10 साल में रिटर्न: 19.76%
- एयूएम : 14,336.52 करोड़ रुपये

कोटक ईएलएसएस टक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 21.15%
- 5 साल में रिटर्न: 20.85%
- 10 साल में रिटर्न: 19.50%
- एयूएम : 5,191.71 करोड़ रुपये

लंबे निवेश का बेहतर विकल्प

आंकड़ों से साफ है कि ईएलएसएस में निवेश से न सिर्फ टैक्स का बेनिफिट मिलता है, बल्कि लंबे अरसे में वेल्थ क्रिएशन के लिए भी ये अच्छा विकल्प साबित हो सकते हैं। इसलिए ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड लंबे समय तक निवेश करने पर अच्छा रिटर्न मिल सकता है। हालांकि निवेश का फैसला करने से पहले यह बात जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि इक्विटी लिंक्ड स्कीम होने के कारण इसमें बाजार से जुड़ा रिस्क हमेशा बना रहता है। लिहाजा निवेश का फैसला अपने रिस्क प्रोफाइल को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। हालांकि अगर आप इसमें सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश करेंगे, तो एवरेजिंग के कारण रिस्क कम रहेगा।

क्या हैं ईएलएसएस फंड

ईएलएसएस फंड एक इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो आपको अपने पैसे को स्टॉक में इन्वेस्ट करने की अनुमति देता है। हालांकि, इसका मतलब हमेशा नहीं है कि आपके पैसे का 100% इक्विटी मार्केट में इन्वेस्ट किया जाएगा। ईएलएसएस फंड, बिना किसी अधिक जोखिम के स्टॉक मार्केट से लाभ उठाने के सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। ईएलएसएस फंड का सबसे अच्छा हिस्सा यह है कि वे आपको इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80सी में उल्लिखित प्रावधानों के तहत टैक्स बचाने की अनुमति देते हैं। ईएलएसएस फंड में इन्वेस्ट करके अपनी वार्षिक टैक्सेबल इनकम से रु. 1,50,000 तक की टैक्स छूट का लाभ उठा सकते हैं। टैक्स लाभ को देने के लिए, ईएलएसएस म्यूचुअल फंड में तीन वर्ष की लॉक-इन अवधि होती है। यह समय परक्राम्य नहीं है, और तीन वर्ष से पहले अपने पैसे निकालने का कोई तरीका नहीं है।

पर्सनल लोन से निपटा सकते हैं कई खर्च, लेकिन रहें अलर्ट

- कई आर्थिक मुसीबतों से बचा सकता है पर्सनल लोन
- सभी तरह की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने में सक्षम

बिजनेस डेस्क

पर्सनल लोन वह अनसिक्योर्ड क्रेडिट होता है जो कोई बैंक या नॉन बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी देती है, ये आपकी क्रेडिट हिस्ट्री और आपकी पर्सनल इनकम के आधार पर लोन चुकाने की क्षमता के आधार पर मिलता है। ये कस्टमर लोन के तौर पर भी जाने जाते हैं, ये एक ऑल पर्पज लोन है जो आपकी सभी तरह की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए लिया जाता है। इक्वेटेड मंथली इंस्टॉलमेंट्स (ईएमआई) लोन चुकाने का माध्यम होती हैं और ये लोन के प्रिंसिपल अमाउंट और लोन के ब्याज को धीरे-धीरे मासिक आधार पर चुकाने का काम करती हैं जब तक लोन पूरी तरह चुकता नहीं हो जाता है। हर ईएमआई में प्रिंसिपल लोन अमाउंट और ब्याज जो चुकाया जाना है उसका कंपोनेंट होता है। चूंकि इस लोन को लेने में कम पेपर वर्क होता है और प्रोसेसिंग में भी कम समय लगता है तो बस आपके पास अच्छा क्रेडिट स्कोर होना चाहिए और आपको ऊंची ब्याज दर चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पर्सनल लोन ईएमआई कैलकुलेटर क्या है

पर्सनल लोन वो अनसिक्योर्ड लोन होते हैं जो कि किसी व्यक्ति को दिए जाते हैं। जो कोई अपनी आर्थिक जरूरतों को हासिल करना चाहते हैं जैसे कि कर्ज को उतारना, शादी-विवाह आदि के लिए खर्च, अचानक आने वाले मेडिकल खर्च के लिए और अन्य किसी जरूरत के लिए पैसा चाहते हैं, वो पर्सनल लोन लेते हैं। पर्सनल लोन ईएमआई कैलकुलेटर के जरिए आपको होम लोन की इंस्टॉलमेंट्स का पता चल जाता है जो आपको रेगुलर इंटरवल पर देनी होगी। ये आपको होम लोन प्लान लेने में एक बेहद जरूरी फाइनेंशियल प्लानिंग टूल के रूप में काम आता है और आप अपना निर्णय ले पाते हैं।

ईएमआई कैलकुलेशन कैस मदद हो पाती है

ईएमआई कैलकुलेशन आपको स्पष्ट रकम के बारे में बताता है कि हर महीने आपको कितनी रकम होम लोन चुकाने में देनी होगी, जिससे आप एक सही फैसला ले सकते हैं कि लोन लेना आपको बजट में है या नहीं। ये आपको लोन की कॉस्ट से जुड़ी अन्य बातों के बारे में भी बताता है, जिससे आप जान पाते हैं कि पर्सनल लोन लेने के बाद आपको हर महीने कितनी रकम अलग निकालकर रखनी होगी और आप लोन लेने की स्थिति में है या नहीं।

ईएमआई जांचने के फायदे

- लोन लेने की क्षमता जांच सकते हैं।
- लोन का कुल अमाउंट और टेन्योर जांच सकते हैं।
- लोन रीपेमेंट की योजना बना सकते हैं।
- प्रीपेमेंट की योजना बना सकते हैं।
- पर्सनल लोन लेने के क्या कारण हो सकते हैं।
- महंगी शादी के लिए लिया जा सकता है।
- किसी बड़ी खरीदारी के लिए हो सकता है।
- मेडिकल इमरजेंसी के लिए।
- घर की मरम्मत या सुधार के लिए।
- क्रेडिट कार्ड के कर्ज को चुकाने के लिए।
- किसी बिजनेस को फाइनेंस करने या किसी निवेश को करने के लिए लिया जा सकता है।

तैयारी बच्चे भी टैक्स बचाने में कर सकते हैं मदद, ऐसे समझें गणित

टैक्स बेनिफिट फायदा उठाकर वित्तीय बोझ कर सकते हैं कम

बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए ज्यादा से ज्यादा टैक्स बचाएं

जानकारी
बिजनेस डेस्क

टैक्स बचाने के लिए नौकरी पेशा लोग तमाम जतन करते हैं। बच्चों के भविष्य के लिए बचत भी बेहद जरूरी है। ऐसे में बच्चे भी टैक्स बचत करवाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। माता-पिता बनने के बाद तमाम जिम्मेदारियों और खुशियों के बीच अक्सर इस पहलू को नजरअंदाज कर दिया जाता है कि बच्चों के कारण परिवार को टैक्स में छूट मिलता है। परिवार में बच्चों की मौजूदगी और उनकी परवरिश से मिल रही खुशी के इतर सरकार द्वारा भी पैरेंट्स को वित्तीय सपोर्ट मिलती है ताकि माता-पिता को बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल, शिक्षा पर होने खर्चों और उनकी जरूरतों को पूरा करने में कम परेशानी हो। छोटे बच्चों के कारण पेरेंट्स को मिलने वाले टैक्स बेनिफिट के बारे में समझाकर और उनका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाकर परिवार के वित्तीय बोझ को काफी हद तक कम किया सकता हैं। इसके साथ ही बच्चों को बेहतर भविष्य दिया जा सकत हैं। परिवार का टैक्स बचाने में आपके बच्चे भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। आइए जानते हैं कि कैसे आप पैरेंट्स बनने के बाद ज्यादा से ज्यादा टैक्स में छूट का लाभ पा सकते हैं।

बच्चों की फीसः नर्सरी से पोस्टग्रेजुएशन तक

- नौकरी पेशा वाले टैक्सपेयर्स अपने बच्चों की शिक्षा लागत में मदद करने के लिए कॉस्ट ऑफ कंपनी (सीटीसी) स्ट्रक्चर के हिस्से के रूप में आयकर अधिनियम की धारा 10(14) के तहत कुछ भत्ते के हकदार हैं। इनमें भत्तों में शिक्षा और हॉस्टल खर्च शामिल है।
- **बच्चों की शिक्षा भत्ता:** हर एक बच्चे के लिए प्रति माह 100 रुपये की कटौती, दो बच्चों के लिए अधिकतम 2,400 रुपये सालाना तक।
- **बच्चों की हॉस्टल भत्ता:** हर एक बच्चे के लिए प्रति माह 300 रुपये की कटौती, दो बच्चों के लिए अधिकतम 2,600 रुपये सालाना।

ट्यूशन फीस पर भी छूट : इसके अलावा बच्चों की शिक्षा के लिए भुगतान की गई ट्यूशन फीस इनकम टैक्स की धारा 80सी के तहत कटौती योग्य है। माता-पिता अलग से सालाना 1.5 लाख रुपये तक की कटौती का डिडक्शन क्लेम कर सकते हैं। यह टैक्स डिडक्शन भारत में स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों या अन्य शैक्षणिक संस्थानों में दो बच्चों तक के लिए भुगतान की जाने वाली ट्यूशन फीस को कवर करती है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह कटौती ट्यूशन फीस के लिए विशिष्ट है और इसमें अन्य शुल्क शामिल नहीं हैं, जैसे कि पार्ट-टाइम या इंटरनेशनल कोर्स पाठ्यक्रमों के लिए।

सुकन्या समृद्धि योजना

धारा 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक की टैक्स बेनिफिट्स के साथ-साथ टैक्स फ्री रिटर्न भी देती है। यह मुख्य रूप से बालिका शिक्षा और विवाह के लिए है क्योंकि राशि का निवेश केवल 21 वर्ष की आयु तक किया जा सकता है। सुकन्या समृद्धि अकाउंट किसी भी पोस्ट ऑफिस या बैंक शाखा में खुलवाया जा सकता है। बेटी के जन्म के समय या फिर 10 साल की उम्र तक यह खाता खुलवाया जा सकता है। खाता खुलवाने के समय कम से कम 1000 रुपये और एक वित्त वर्ष में अधिकतम 1.5 लाख रूपये जमा करवाने होते हैं।

बीमा योजना

बच्चों की शैक्षणिक भविष्य को वित्तीय सुरक्षा देने के लिए, माता-पिता को बच्चों के नाम पर बीमा योजनाओं और यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान जैसे निवेश स्कीम पर विचार करने की सलाह दी जाती है। ये उपकरण न सिर्फ टैक्स बेनिफिट देते हैं बल्कि योगदान देने वाले माता-पिता की मृत्यु जैसी अप्रत्याशित परिस्थितियों के मामले में वित्तीय सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। यानी बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए आप पीपीएफ, सुकन्या समृद्धि खाता, म्यूचुअल फंड्स खाता, ट्रेडिशनल इंश्योरेंस पॉलिसी जैसे स्कीम की मदद ले सकते हैं। इसमें आप जो निवेश करेंगे, उस पर सेक्शन 80C के तहत डिडक्शन मिलता है।

एजूकेशन लोन

एजूकेशन लोन पर ब्याज के बिना किसी ऊपरी सीमा के धारा 80ई के तहत टैक्स डिडक्शन के लिए पात्र है। यह प्रावधान विशेष रूप से हायर इनकम वाले परिवारों के लिए फायदेमंद है और यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय बाधाओं के बावजूद हायर एजुकेशन का सपना पहुंच के भीतर बना रहे। बच्चे की पढ़ाई के लिए आप एजुकेशन लोन लेकर सेक्शन 80ई के तहत टैक्स बचा सकते हैं।

हेल्थ इंश्योरेंस पर

इनकम टैक्स की धारा 80डी बच्चों के लिए भुगतान किए गए हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स डिडक्शन का लाभ देती है। हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी में बच्चे, पत्नी और खुद यानी परिवार के लिए टैक्स डिडक्शन की ऊपरी लिमिट 25,000 रुपये है। इनकम टैक्स की धारा 80डी के तहत बच्चे वाला परिवार 25,000 रुपये तक के टैक्स डिडक्शन के लिए क्लेम कर सकता है। इसके अलावा कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ इंश्योरेंस कवर अतिरिक्त 5,000 रुपये तक का क्लेम सुनिश्चित करता है। यह कवरेज होने पर परिवार बच्चों के प्रिवेंटिव हेल्थ चेकअप के लिए 5,000 तक की सब-लिमिट का दावा भी कर सकते हैं।

इन पर भी राहत

इसके अलावा, सेक्शन 80डीडी और 80डीडीबी विकलांग या विशिष्ट बीमारियों वाले बच्चों के मेडिकल ट्रीटमेंट पर होने वाले खर्चों के लिए टैक्स डिडक्शन मिलते हैं। धारा 80डीडी के तहत, विकलांग बच्चों के चिकित्सा उपचार और रखरखाव से संबंधित खर्चों के लिए टैक्स डिडक्शन का दावा किया जा सकता है।

खबर संक्षेप

एटीएम बदलकर खाते से निकाले डेढ़ लाख रुपये

झज्जर। शहर में एटीएम से रुपये निकालने पहुंचे एक व्यक्ति ने किसी शातिर द्वारा एटीएम बदलने व बाद में डेढ़ लाख रुपये खाते से निकालने की शिकायत पुलिस को दी है। क्षेत्र के गांव गिजाडौद निवासी प्रदीप कुमार पुत्र धर्मबीर ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसने अपने भतीजे लखन को अपना एटीएम कार्ड देकर दस हजार रुपये निकलवाने के लिए शहर भेजा था। इस दौरान किसी शख्स द्वारा उसका एटीएम बदल लिया गया। बाद में उसके खाते से पचास हजार रुपये की पेमेंट तीन बार निकाली गई है। ऐसे में उसके डेढ़ लाख रुपये किसी शातिर व्यक्ति ने निकाल लिए। पुलिस ने

अवैध रूप से ले जाई जा रही दो गायों को छुड़वाया

झज्जर। गुरुग्राम रोड स्थित गौकुल धाम के सामने से जा रही एक गाड़ी को शक के आधार पर पकड़ा गया तो उसमें से गौकशी के लिए ले जाई जा रही दो गायों को छुड़ाया गया। पुलिस को दी शिकायत में सीताराम गेट निवासी अनिल ने बताया कि रात करीब साढे.बारह बजे उसने एक गाड़ी को रुकवाया तो उसमें दो गाय मिली। जब उन्होंने गायों के संबंध में गाड़ी चालकों से पूछा तो वे कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके। पुलिस ने अनिल की शिकायत पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

राजकीय महाविद्यालय दूबलधन में स्टूडेंट लीगल लिटरेसी मिशन के अंतर्गत प्रतियोगिताओं का आयोजन

निबंध लेखन में अंतिम, स्लोगन में भारती और पोस्टर मेकिंग में पलक रही अव्वल

हरिभूमि न्यूज ⏭| झज्जर

झज्जर। होनहार प्रतिभागी महाविद्यालय स्टॉफ सदस्यों के साथ। फोटो : हरिभूमि

राजकीय महाविद्यालय दूबलधन में स्टूडेंट लीगल लिटरेसी मिशन के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉक्टर सत्यव्रत सोलंकी की अध्यक्षता में आयोजित इन दो दिवसीय प्रतियोगिताओं में मानवाधिकार, मौलिक कर्त्तव्य, नशीली दवाओं की लत, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज निषेध, शिक्षा का अधिकार, बाल विवाह, सूचना का अधिकार आदि विषयों को शामिल किया गया। लीगल लिटरेसी सेल प्रभारी डॉक्टर सरला ने बताया कि निबंध लेखन, स्लोगन लेखन और पोस्टर मेकिंग आदि प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए समाज को जागरुक करने का कार्य किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में छात्रा अंतिम को पहला, टिन्नी को दूसरा व भावना को तीसरा स्थान मिला। स्लोगन लेखन में भारती ने प्रथम, नेहा ने द्वितीय व टीना ने तृतीय पुरस्कार जीता। पोस्टर मेंकिंग में पलक पहले, अमित दूसरे व टिन्नी तीसरे स्थान पर रही।

बैग सजाओ प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी सम्मानित

झज्जर। एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में शनिवार को बैग सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने बैग को सुव्यवस्थित रखने के प्रति जागरुक करना था। प्राइमरी हेड नीलम कुमारी ने बताया कि सभी विद्यार्थियों ने अपने-अपने स्कूल बैग को बेहतर ढंग से सजाया। प्रतियोगिता परिणामों में दूसरी कक्षा से हिमांशी, गुंजन, मयंक, वंश, पल्लवी, मयंक, मीनाक्षी, गरिमा व हर्ष अपने-अपने विभाग में प्रथम स्थान पर रहे। तीसरी कक्षा से वंश, काव्या व वरूण ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चौथी कक्षा से इशिका, कल्पित, अरमान व कृतिका तथा पांचवीं कक्षा में विनीत, यश, नक्ष व हिमांशु को प्रथम स्थान मिला। एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने विद्यार्थियों को अपने बैग को व्यवस्थित रखने के लिए प्रोत्साहित किया। एचडी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा एवं हेमंत गुलिया ने विजेता विद्यार्थियों को इनाम देकर सम्मानित किया।

अंग्रेजी सुलेख प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। प्रतियोगिता में भागीदारी करते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। कुलदीप सिंह मैमोरियल पब्लिक स्कूल में शनिवार को अंग्रेजी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पहली से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। सुंदर लिखाई व अक्षरों की बनावट के आधार पर घोषित प्रतियोगिता परिणामों में उत्कृष्ट स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। स्कूल निदेशिका कोमल सांगवान ने विद्यार्थियों को पढ़ाई में बेहतरीन लिखावट की महत्ता बताते हुए उन्हें भविष्य में भी निरंतर मेहनत करने की प्रेरणा दी।

स्लोगन में हिमांशी व भाषण प्रतियोगिता में पुष्कर ने पाया पहला स्थान

झज्जर। शनिवार को गांव पाटौदा, दुजाना राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। गांव पाटोदा स्कूल में स्लोगन मुकाबले में हिमांशी व लक्की ने प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार भाषण मुकाबले में कक्षा नौवीं के पुष्कर, कविता लेखन में इसी कक्षा की कीर्ती ने बाजी मारी। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में दस जमा एक की कुसुम ने पहला,दस जमा दो की रौनक ने दूसरा तथा कक्षा नौवीं के लक्ष्य ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

क्रियाकलापों के माध्यम से दी नवरस की प्रस्तुति

झज्जर। आरईडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छुछकवास में शनिवार को नवरस विषय पर विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान आरईडी संस्था निदेशक जितेंद्र सिंह अहलावत ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने उपनिदेशिका खुशबू अहलावत, बिजेंद्र अहलावत व प्राचार्या अनीता सिवाच, ललिता छाबड़ा व विंग हैड सरिता मल्हान आदि के साथ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम की शुरूआत की। इसके उपरांत विद्यार्थियों ने मां सरस्वती वंदना, हिंदी प्रार्थना, शपथ, रोचक तथ्य एवं सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति देते हुए विभिन्न क्रियाकलापों से नवरस को प्रदर्शित किया। विद्यार्थियों ने हिंदी स्किट के माध्यम से करूण रस, रैम्प वॉक करते हुए भयानक रस, अंग्रेजी स्किट के माध्यम से हांस्य रस तथा नृत्य व देशभक्ति कार्यक्रमों के माध्यम से श्रृंगार रस व वीर रस को प्रदर्शित किया।

इनेलो से भाजपा में शामिल हुई महिलाओं का किया स्वागत

हरिभूमि न्यूज ⏭| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। भाजपा में शामिल हुई महिलाओं का स्वागत करते डॉ पंकज जैन।

वार्ड नंबर-एक की इनेलो महिला कार्यकर्ता नैंसी देवी व सोनिका भाजपा में शामिल हुई। भाजपा जिला उपाध्यक्ष डॉ पंकज ने सेक्टर-6 स्थित कार्यालय पर पार्टी का पटका पहनाकर उनका स्वागत किया। आश्वस्त किया कि भाजपा में कार्यकर्ताओं को भरपूर मान-सम्मान मिलता है। यहां साधारण कार्यकर्ता भी उच्च पदों पर पहुंचकर राष्ट्र व जनता की सेवा कर सकता है। पंकज जैन ने कहा कि भाजपा सरकार की जन हितैषी योजनाएं हर वर्ग को लाभ पहुंचा रही है। ऐसी ही नीतियों के कारण आज महिलाएं आत्मनिर्भर हैं।

फसल जलने पर मुआवजा देने की मांग

बहादुरगढ़। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के प्रदेश सचिव जयकरण मांडोठी तथा अध्यक्ष अनूप सिंह मातनहेल ने कहा कि हर वर्ष प्रदेश में सैकड़ों एकड़ फसल बिजली के तारों से निकली चिंगारियों तथा अन्य कारणों से आग लगने से बर्बाद हो जाती हैं। किसान हाथ मलते रह जाते हैं और कर्जजाल में फंस जाते हैं। नरवाना में किसान धर्मवीर, रामदिया, रघुबीर, जय भगवान, महेंद्र तथा बीर आदि की लगभग 31 एकड़ पकी-पकाई गेहूं की फसल आग लगने से जलकर राख हो गई है। संगठन हरियाणा सरकार से पीड़ित किसानों को कम से कम 50 हजार प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग करता है।

राजकीय विद्यालय कबलाना में विद्यार्थियों के लिए काउंसलिंग सेशन आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭| झज्जर

झज्जर। दिमाग बढ़ाने की प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए संदीप जांगड़ा। फोटो : हरिभूमि

स्वास्थ्य विभाग के राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम द्वारा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कबलाना में विद्यार्थियों के लिए नेत्र जांच, फिजियोथैरेपी जांच एवं काउंसलिंग सेशन का आयोजन किया गया। डॉक्टर रोबिन, आप्थाल्मिक अस्सिटेंट आकाश व आप्थाल्मिक अस्सिटेंट प्रिंस द्वारा विद्यार्थियों की नेत्र जांच करते हुए जरुरतमंद विद्यार्थियों को विभाग द्वारा निःशुल्क चश्मा बनाए जाने की बात कही। फिजियोथेरेपिस्ट अरुण वर्मा ने विद्यार्थियों को स्वस्थ रहने व हड्डी मजबूत बनाए रखने के लिए आवश्यक टिप्स दिए। राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम मित्रता क्लीनिक के जिला अर्श काउंसलर संदीप कुमार जांगड़ा द्वारा उपस्थित विद्यार्थियों की काउंसलिंग की गई। उन्होंने काउंसलिंग सेशन के साथ-साथ प्रतिभा मंथन करते हुए विद्यार्थियों को दिमाग बढ़ाने जैसी खेल एवं व्यायाम कराए तथा विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा कि बच्चों में प्रतिभा निकालने में हमें आगे आना चाहिए और उनके अंदर छिपी प्रतिभा को निखारना एवं बाहर निकलना बहुत जरूरी है जोकि एक बड़ी चुनौती है।

चित्र व स्लोगन से पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

बहादुरगढ़। चित्रकला लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭| बहादुरगढ़

पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ व बिजली बचत का जागरूकता संदेश देने के लिए शक्ति विद्या मंदिर हाई स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता हुई। इसमें प्रतिभागी विद्यार्थियों ने चित्रों, स्लोगन के जरिए सार्थक संदेश दिया। स्कूल डायरेक्टर प्रवीण शर्मा, प्राचार्य राजेश्वरी देवी, उप प्राचार्य पूनम ने विद्यार्थियों की जमकर सराहना की। शिक्षिका कीर्ति शर्मा, स्वीटी, सुमित्रा, रीतू, सरिता, रीटा, तरुण कौशिक आदि ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। सीनियर व जूनियर वर्ग में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

विधि साक्षरता प्रकोष्ठ ने आयोजित की प्रतियोगिताएं

कविता पाठ प्रतियोगिता में निशा तो निबंध लेखन में नीलम को मिला पहला स्थान

हरिभूमि न्यूज ⏭| झज्जर

झज्जर। विजेता प्रतियोगियों के साथ प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह। फोटो : हरिभूमि

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में विधि साक्षरता प्रकोष्ठ द्वारा कविता पाठ, भाषण, स्लोगन लेखन, निबंध लेखन तथा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय स्तर की इन प्रतियोगिताओं के दौरान प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया और विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिताओं का निर्णय डॉक्टर पुष्पेंद्र कादियान, श्रीकिशन चाहर, डॉक्टर संदीप, संजीव कुमार, डॉक्टर अमित भारद्वाज, डॉक्टर जगबीर सिंह, डॉक्टर श्रीकृष्ण दूहन, अरविंद कुमार, डॉक्टर प्रवीण, डॉक्टर कुलदीप, शिव शंकर और अशोक ने किया। प्रतियोगिता परिणामों में कविता पाठ में निशा प्रथम, नीलम द्वितीय और अनामिका तृतीय रही। निबंध लेखन में नीलम प्रथम, कोमल द्वितीय और हरिओम तृतीय रहे। स्लोगन लेखन में प्रवीण प्रथम, संजना द्वितीय और नेहा तृतीय रहे जबकि पोस्टर मेकिंग में भारत को पहला, साक्षी को दूसरा व अनिल कुमार को तीसरा स्थान मिला। भाषण प्रतियोगिता के लिए अनामिका व नीलम को सम्मानित किया गया। मंच संचालन प्राध्यापक दीपक कुमार ने किया। इस मौके पर प्रवक्ता रुचिका, मंजीत, सुदेश, डॉक्टर सुरजीत, सारिका, डॉक्टर ज्योति, अपेक्षा, अंकुर, जितेंद्र और डॉक्टर अरुण सहित अन्य भी मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में लापता किशोर का नहीं लगा सुराग

- तीन सप्ताह बीत जाने के बाद भी कुछ अता-पता नहीं

हरिभूमि न्यूज ⏭| बहादुरगढ़

घर से खेलने के लिए निकला किशोर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता है। परिजन तमाम संभावित ठिकानों पर तलाश चुके हैं लेकिन। अब परिजनों ने एक बार फिर पुलिस से तलाश की गुहार लगाई है। पुलिस भी लगातार किशोर की तलाश में प्रयास कर रही है।

जानकारी के अनुसार, जींद जिले का निवासी बिजेंद्र यहां फ्रेंड्स कॉलोनी में रहता है। बिजेंद्र के अनुसार, गत 29 मार्च को उसका बेटा वंश घर से बाहर गया था लेकिन वापस नहीं आया। काफी देर तक नहीं लौटा तो उसकी तलाश शुरू की। तब से लेकर अब तक तमाम संभावित ठिकानों पर तलाश चुके हैं लेकिन उसका कुछ अता-पता नहीं है। आशंका है कि बेटे को किसी ने कहीं छिपा रखा है।

पुलिस तलाशने में मदद करे। वहीं, लाइनपार थाने से जांच अधिकारी एएसआई राजेंद्र सिंह का कहना है कि परिजनों के बयान पर धारा 365 के तहत केस दर्ज किया गया था। किशोर की तलाश के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन फिलहाल नहीं मिल पाया है। जल्द से जल्द उसे ढूंढने की कोशिश है।

तिमारपुर: झगड़ा कर रहे युवकों का विरोध करने पर मार दी थी गोली

क्राइम ब्रांच ने वारदात में शामिल नाबालिग समेत तीन पकड़े

- आरोपी राहुल पहले भी हत्या, हत्या के प्रयास समेत कुल पांच मामलों में शामिल रहा है
- रोहन पर भी तीन केस दर्ज थे।

हरिभूमि न्यूज ⏭| नई दिल्ली

क्राइम ब्रांच ने हत्या की कोशिश में शामिल रहे एक नाबालिग समेत तीन आरोपियों को पकड़ा गया है। इनमें दो पहले भी कई जघन्य अपराधों में शामिल रहे हैं। इनके नाम रोहिणी निवासी रोहन, गोपालपुर निवासी राहुल उर्फ सनी है। डीसीपी अमित गोयल के अनुसार 1-2 फरवरी की दरम्यानी रात तिमारपुर में फायरिंग की कॉल मिली थी।

पुलिस मौके पर पहुंची तो कॉलर ने बताया कि वह अपने दोस्त के साथ गांधी विहार में किराए के मकान में रहकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा है।

पढ़ते समय उसे घर के बाहर झगड़े की आवाज सुनाई दी। बाहर आकर देखा तो गली में चार लड़के गाली-गलौज कर रहे थे। उन्हें शोर व झगड़ा नहीं करने के लिए बोला तो सभी लड़के नाराज हो गए और उससे झगड़ा करने लगे। तभी एक ने पिस्टल निकाल पीड़ति के दोस्त पर फायरिंग कर दी। उसे पेट में गोली लगी, जिसके बाद घायल को फौरन नजदीकी अस्पताल ले जाया गया।

केस में एक आरोपी को लोकल पुलिस अरेस्ट कर चुकी थी, जबकि बाकी को एक सूचना पर भलस्वा डेयरी एरिया से पकड़ा गया। आरोपी राहुल पहले भी हत्या, हत्या के प्रयास समेत कुल पांच मामलों में शामिल रहा है।

मतदाता सूची में नाम दर्ज होने पर ही किया जा सकेगा मतदान

झज्जर। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कैप्टन शक्ति सिंह ने कहा कि लो क तं त्र की सबसे अहम कड़ी मतदाता हैं, इ स लि ए अभी भी यदि किसी नागरिक का वोटर कार्ड नहीं बना है तो वे तुरंत अपना वोटर कार्ड बनवा लें ताकि चुनावों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। उन्होंने कहा कि जिन युवाओं की आयु एक अप्रैल को 18 वर्ष की हो चुकी है ऐसे युवा आगामी 26 अप्रैल तक अपना वोट बनवा सकते हैं और लोकसभा चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि वोट बनवाने से संबंधित जानकारी के लिए टोल फ्री नंबर-1950 पर संपर्क कर सकते हैं।

घर से दो बच्चों के शव बरामद, मां बेहोश मिली

- बच्चों का पिता गायब, पुलिस कर रही तलाश

हरिभूमि न्यूज ⏭| नई दिल्ली

दिल्ली में महज पांच दिन के भीतर डबल मर्डर की तीसरी वारदात सामने आई है। ईस्ट दिल्ली के पांडव नगर स्थित शशि गार्डन इलाके में घर के अंदर भाई बहन की हत्या कर दी गई। शनिवार दोपहर दोनों ही लाश बंद घर से बरामद हुई। वहीं, मौके पर दूसरे कमरे में बच्चों की मां भी अचेत हालत में मिली। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस का कहना है कि बच्चों का पिता गायब है। उसकी तलाश की जा रही है।

पुलिस के मुताबिक शनिवार दोपहर करीब दो बजे पांडव नगर थाने को शशि गार्डन निवासी श्याम जी (42) के लापता होने की सूचना मिली। बताया गया कि उनका घर भी शुक्रवार से बंद है। पुलिस मौके पर पहुंची जहां घर के बाहर ताला लगा मिला। ताले को तोड़ पुलिस दरवाजा खोल घर के अंदर दाखिल हुई। 15 साल का एक लड़का और नौ साल की लड़की एक कमरे के अंदर मृत हालत में मिले। वहीं दूसरे कमरे में उनकी मां भी अचेत हालत में मिली। उसे फौरन पुलिस ने नजदीकी अस्पताल भिजवाया। क्राइम और एफएसएल की टीम भी मौके पर पहुंची। पुलिस को फरार पिता पर वारदात को अंजाम देने का शक है। हत्या और हत्या की कोशिश का मुकदमा दर्ज कर पुलिस घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज भी चैक कर रही है। मृतकों के नाम कार्तिक चौरसिया (15) व आस्था उर्फ गुन्नू (9) है। इनकी मां का नाम शन्नू चौरसिया (40) है, उसे एम्स में भर्ती कराया गया है। हालत नाजुक बताई गई है। दोनों बच्चों की गला दबाकर हत्या करने की आंशका है।

घर के बाहर लगा था ताला

वहीं महिला के ऊपर किसी भारी वस्तु से हमला किया गया था। तीनों को मरा समझ आरोपी घर के बाहर से ताला लगाकर फरार हो गया था। बच्चों की हत्या कैसे की गई, इसका वास्तविक कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट में पता चलेगा। बच्चों के शव एक से दो दिन पुराने होने की शंका हैं। श्याम जी चौरसिया मूलरुप से गली नंबर छह शशि गार्डन, पांडव नगर में रहता था। वह मयूर विहार फेज वन के नजदीक चाय की स्टॉल लगाता था।

दोनों सरकारी स्कूल पढ़ते थे

कार्तिक सरकारी स्कूल में नौंवी कक्षा और आस्था छठी कक्षा में पढ़ते थे। श्याम जी के रिश्तेदार अमृतलाल ने बताया कि परिवार के लोग शुक्रवार सुबह से ही श्याम से संपर्क करने की कोशिश कर रहे थे।

शन्नू का मोबाइल भी बंद जा रहा था। श्याम भी फोन रिसीव नहीं कर रहा था। श्याम का छोटा भाई रामजी शुक्रवार शाम दूसरी मंजिल पर भाई के फ्लैट पर आया था लेकिन ताला लगा देख वापस लौट गया। वह सुबह फिर से आया तो ताला देखकर शक हुआ। साथ ही घर के अंदर से बदबू भी महसूस हुई। भाई के परिवार से कोई संपर्क नहीं होने और कुछ गड़बड़ी का अंदेशा होने पर वह दोपहर को तीसरी बार इस फ्लैट पर पहुंचा। अब उसे ज्यादा बदबू महसूस हुई, जिसके बाद उसने पुलिस को भाई के लापता होने की सूचना दी। अब पुलिस इस दंपति के रिश्ते को लेकर श्याम के परिजनों से जानकारी जुटा रही है। श्याम के अन्य चार भाई भी पांडव नगर व शशि गार्डन एरिया में ही रहते हैं। पुलिस का यह भी कहना है कि घर में लाइट और पंखे ऑन थे। शन्नू की सांसे चल रही थी। उसके शरीर पर चोट के निशान मिले हैं।

खबर संक्षेप

कल निकाली जाएगी शोभा यात्रा

बहादुरगढ़। मंदिर श्री बालाजी महाराज की ओर से हनुमान जन्मोत्सव उपलक्ष्य में शहर में भव्य शोभा व ध्वजा यात्रा निकाली जाएगी। आगामी 22 अप्रैल की सुबह ध्वजा और शोभा यात्रा निकलेगी। इसकी शुरुआत अनाज मंडी स्थित राधाकृष्ण मंदिर से होगी। रेलवे रोड, रोहतक-दिल्ली रोड, झज्जर रोड, मांडोठी बाजार, मेन बाजार व नजफगढ़ रोड से होते हुए यात्रा बालाजी मंदिर तक पहुंचेगी। शोभा यात्रा में रामू राजस्थानी की झांकियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी। इसके बाद 23 अप्रैल को मंदिर परिसर में जन्मोत्सव कार्यक्रम होगा। इस दौरान सुबह महावीर मंदिर से ध्वजा यात्रा भी निकाली जाएगी। यह जानकारी प्रधान रमेश गुप्ता ने दी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की तैयारियां चल रही हैं। मंदिर को भव्य रूप से सजाया जाएगा। काफी श्रद्धालु शोभा, ध्वजा यात्रा में भाग लेंगे।

चौपाल के बाहर से बाइक चोरी

बहादुरगढ़। गांव छारा में एक चौपाल के बाहर से बाइक चोरी हो गई। वाहन मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। छारा के निवासी सुनील ने कहा है कि वह गांव की एक चौपाल में काम कर रहे थे। बाइक चौपाल के बाहर खड़ी थी। देर रात को चौपाल से निकले तो बाइक नजर नहीं आई। अपने स्तर पर तलाश की लेकिन नहीं मिली। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया है। पुलिस तलाशने में मदद करे। उधर, मांडोठी चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

23 को होगा जौहरी नगर में कार्यक्रम

बहादुरगढ़। लाइनपार के जौहरी नगर स्थित राधे फार्म हाउस में श्री हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 23 अप्रैल को श्री हनुमानजी व श्री श्याम प्रभु खाटू वाले का विशाल भंडारा और श्री श्याम वंदना महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रम में राधा विमल दीक्षित, दिव्या चोपड़ा, साहिल शर्मा, भारत अग्रवाल आदि मधुर भजनों की वर्षा करेंगे। महोत्सव में विभिन्न झांकियां विशेष आकर्षण का केन्द्र रहेंगी।

प्रशासन को 24 तक का दिया अल्टीमेटम

प्रजापति चौक पर दूसरा बोर्ड लगाने से समाज में रोष

प्रशासन को 24 तक का दिया अल्टीमेटम सीएम की रैली के विरोध की चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

झज्जर। बैठक के दौरान अपनी बात रखते हुए नीरज भगतजी। फोटो : हरिभूमि

शहर के सांपला रोड पर बनाए गए दक्ष प्रजापति चौक विवाद मामले को लेकर छावनी मोहल्ला स्थित दक्ष प्रजापति धर्मशाला में प्रजापत समाज द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में झज्जर जिले के अलावा रेवाड़ी व रोहतक से भी प्रजापत समाज के लोग शामिल हुए। इस दौरान सर्वसम्मत्ति द्वारा रामफल प्रजापत को सभा का अध्यक्ष बनाया गया। प्रजापत समाज के नवनियुक्त प्रधान रामफल ने बताया कि दक्ष प्रजापति चौक मामले में समाज द्वारा निर्णय लिया गया है कि यदि 24 अप्रैल तक इस संबंध में जिला प्रशासन व सरकार द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो वे 26 अप्रैल को शहर में होने वाली विजय संकल्प रैली में सीएम को काले झंडे. दिखाकर अपना विरोध दर्ज कराएंगे। यदि उसके बाद भी चौक का नामकरण नहीं किया जाता तो प्रदेश भर के जिलों से समाज के लोगों को एकजुट करते हुए आगामी रणनीति तैयार की जाएगी।

यह है मामला : नीरज भगत ने बताया कि करीब दो वर्ष पहले शहर के सांपला मार्ग के चौक का नामकरण दक्ष प्रजापति चौक रखने की प्रक्रिया शुरू हुई थी। इसके बाद सर्व सम्मत्ति द्वारा प्रस्ताव पास कर बीते वर्ष दक्ष प्रजापति चौक का उद्घाटन स्वयं नगर परिषद चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने किया था। उस दौरान पूर्व वाइस चेयरमैन सहित कुछ पार्षद भी मौजूद रहे। लेकिन अब एक पार्षद द्वारा प्रजापति चौक पर ही महादेव चौक का बोर्ड लगा दिया गया है। इसके विरोध में पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल, भाजपा सांसद अरविंद शर्मा, राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ से मिलकर अपनी समस्या बता चुके हैं लेकिन कोई समाधान नहीं हुआ। इस दौरान पार्षद नरेश बेडवाल, प्रजापत समाज के शहरी प्रधान रामपत, डॉक्टर प्रवीन, फकीरचंद खोहाल, सतीश प्रजापति, राजकुमार, आंनद, मंजीत, कृष्ण डीघल, राममेहर प्रजापत, मुनेश प्रजापति, राजेश दुजाना, एडवोकेट खुशीलाल, सुरेंद्र, गुलाब प्रजापत सहित अन्य भी मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। प्रतियोगिता में भाग लेते राजकीय कॉलेज के छात्र-छात्राएं।

मुस्कान और साक्षी की टीम रही प्रथम

संस्कृत विभाग ने कराई प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- प्रो. सरला ने रामायण व श्रीमद्भगवद्गीता के महत्व पर प्रकाश डाला।

राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में कार्यवाहक प्राचार्या सुमन हुड्डा की अध्यक्षता में संस्कृत विभाग द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. सरला के निर्देशन में हुई प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का विषय श्रीमद् भागवत गीता और रामायण रहे। विद्यार्थियों ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में अपनी बेहतरीन प्रतिभा का परिचय दिया। कार्यक्रम में पांच टीमों ने भाग लिया तथा प्रश्नों के कुल 6 राउंड रखे गए। जिसमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रथम स्थान पर टीम वाल्मीकि रही, जिसमें मुस्कान व साक्षी थी। जबकि दूसरे स्थान पर टीम व्यास रही, जिसमें सेजल व मुस्कान थी। तीसरे स्थान पर टीम कालिदास रही, जिसमें सागर व हर्ष थे। सुमन हुड्डा ने कहा कि रामायण व गीता से भरपूर ज्ञान मिलता है। ऐसे आयोजनों में विद्यार्थियों को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। प्रो. सरला ने रामायण व श्रीमद्भगवद्गीता के महत्व पर प्रकाश डाला। साहित्य संस्कृत संघ के छात्र सदस्य योगेश ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। इस मौके पर प्रो. अमित छिकारा, प्रो. राजीव दहिया, प्रो. विकास शौकीन व प्रो. मीनाक्षी कालरा आदि मौजूद रहे।

करंट से झुलसे किशोर ने तोड़ा दम

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- पीजीआई में उपचार के दौरान हुई गगनजीत की मौत

बीते सोमवार को रेलवे की बिजली लाइनों की चपेट में आकर बुरी तरह से झुलसे किशोर ने दम तोड़ दिया है। पीजीआई में उपचार के दौरान उसने अंतिम सांस ली। रविवार को पुलिस द्वारा शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। मृतक की पहचान करीब 14 वर्षीय गगनजीत के रूप में हुई है। लाइनपार का रहने वाला था। जानकारी के अनुसार, सोमवार 15 अप्रैल को वह खेलने के लिए पार्क जा रहा था। रेलवे के प्लेटफार्म और पार्क के बीच से गुजर रही लाइन पर तेल माल गाड़ी खड़ी हुई थी। लाइन क्रास करने के लिए अंजाने में वह मालगाड़ी पर लगी सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। इसी दौरान ऊपर से गुजर रही 33 हजार वोल्ट की लाइन की चपेट में आ गया। बुरी तरह से झुलस गया। नागरिक अस्पताल से उसे पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। तब से उसका ईलाज जारी था। सेहत में भी सुधार हो रहा था लेकिन शनिवार को अचानक उसकी तबीयत बिगड़ी और सांस थम गई। सूचना पाकर जीआरपी बहादुरगढ़ पीजीआई के लिए रवाना हुई। रविवार को शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

फंदा लगाने से विवाहिता की मौत

बहादुरगढ़। लाइनपार के छोटूराम नगर में एक विवाहिता का शव फंदे पर लटका हुआ मिला। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा दिया है। परिजनों के बयान के बाद पुलिस आगामी कार्रवाई करेगी। रविवार को शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। मृतका की पहचान करीब 22 वर्षीय पूजा के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार, पूजा इन दिनों यहां छोटूराम नगर में अपने मायके आई हुई थी। इसके मां-बाप काम के सिलसिले में बाहर गए हुए थे। शनिवार की दोपहर को उसका शव फंदे पर लटका देखा गया। सूचना पाकर लाइनपार थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और शव को फंदे से उतरवाया गया। इसके बाद शव को नागरिक अस्पताल में रखवा दिया गया। महिला ने किन कारणों के चलते फंदा लगाया, ये फिलहाल सवाल बना हुआ है। फिलहाल परिजनों के बयान नहीं हो सके हैं। बयान के बाद ही पुलिस इस केस में आगामी कार्रवाई करेगी। रविवार को शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

प्रतियोगिता में जेसिका व कीर्ति रही प्रथम

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- निर्णायक मंडल में सुजाता वर्मा तथा डॉ. मंजीत शामिल

हरियाणा सरकार द्वारा चलाए गए छात्र कानूनी साक्षरता मिशन के तहत वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में ह्यूमन राइट्स और फंडामेंटल राइट्स पर स्लोगन और पोस्टर में किं ग ऑ न ला इ न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने कहा कि मिशन का उद्देश्य छात्रों को कानून के नियमों और अधिकारों के बारे में जागरूक करना है। लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए प्रत्येक वर्ग को उनके अधिकार प्राप्त होना आवश्यक है। सांस्कृतिक सैल की प्रभारी डॉ. कुसुम ने बताया कि पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर जेसिका, द्वितीय स्थान पर महक राठी, तृतीय स्थान पर रही। स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कीर्ति, द्वितीय स्थान पर श्वेता रही। निर्णायक मंडल में सुजाता वर्मा तथा डॉ. मंजीत शामिल थी।

इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

बहादुरगढ़। शौर्य, नेहा व रिया का अभिनंदन करते शतीश नंबरदार व अन्य ।

शौर्य, नेहा व रिया का किया अभिनंदन

बहादुरगढ़। वरिष्ठ भाजपा नेता शतीश नंबरदार के कार्यालय पर यूपीएससी की परीक्षा पास करने वाले शौर्य अरोड़ा व नेहा का अभिनंदन किया गया। सीए की परीक्षा पास करने वाली रिया मक्कड़ का भी स्वागत-सम्मान किया गया। नंबरदार ने कहा कि 14वीं रैंक हासिल करने वाले शौर्य अरोड़ा तथा 719वीं रैंक हासिल करने वाली नेहा ने शहर का नाम रोशन किया। कार्यक्रम में एडवोकेट गौरव राठी व विक्की राठी के अलावा जगदीश एलावादी, हुक्म सिंह सांखोल, पार्षद अश्विनी शर्मा, खरैती लाल बत्रा, जयभगवान नंबरदार, दीपक बतरा, तरुण ठुकराल, अशोक पाहवा, तेजपाल राठी, संजीव राठी, नरेंद्र शर्मा, कृष्ण सैनी, सोनू मक्कड़, मनोज राठी, टीनू सरदार, पवन बामड़ोली, महेश हेड़ा, सतीश घई, करतार सिंह राणा, शशि तलवार, सरदार सतनाम सिंह व महाबीर शर्मा आदि मौजूद रहे।

बहू ने ससुरालियों पर लगाए गंभीर आरोप

पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू की

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- जांच के बाद ही असल स्थिति साफ हो पाएगी

एक विवाहिता ने अपने ससुरालियों पर मारपीट, छेड़छाड़ करने व धमकी देने जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं। आरोप कितने सही हैं, ये तफ्तीश का विषय है।

पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामला बादली थाने के अधीन लगती चौकी के क्षेत्र का है। शिकायत में पीड़िता ने कहा है कि सप्ताहभर पहले ननद के साथ हमारा विवाद हो गया था। ननद ने हमारी पुलिस को शिकायत दे दी थी, जिसका फैसला हो गया। फैसले के अनुसार, हमें अपना कमरा खाली करना था। हमने कमरा खाली करने के बजाय मकान बदलना ही उचित समझा। गत 18 अप्रैल को वह अपने पति, मां-पिता व चाची के साथ ससुराल में अपना सामान लेने गई थी। वहां सास-ससुर और देवरानी ने घर में घुसते ही हमारे साथ मारपीट शुरू कर दी। कुर्सी, डंडों से वार किया गया। इस हमले में मेरी मां व चाची को गंभीर चोट आई। उनके आभूषण भी इस दौरान गायब हो गए। मैंने अपनी छह महीने की बच्ची और खुद की जैसे-तैसे जान बचाई। मेरे पति और पिता को फंसाने के लिए भी गलत इल्जाम लगाने के प्रयास किए। उधर, मामले की वजह अभी स्पष्ट नहीं है। दूसरे पक्ष ने शिकायत दी है या नहीं, ये भी अभी साफ नहीं है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जांच के बाद ही असल स्थिति साफ हो पाएगी।

फाउंडेशन स्कूल में विद्यार्थियों को किया जागरुक

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- आत्मविश्वास और एकाग्रता ही सफलता का आधार : बीके निधि बहन

बहादुरगढ़। बीके निधि को स्मृति चिह्न भेंट करती प्रिंसिपल मोनिका राठी।

शहर के फाउंडेशन स्कूल में सेक्टर-13 ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र से बीके निधि बहन और आचार्य लवकेश ने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य और एकाग्रता को लेकर जागरूक किया। स्कूल निदेशक हर्षदीप राठी और प्रिंसिपल मोनिका राठी ने ब्रह्माकुमारी संस्था का धन्यवाद किया। बीके निधि बहन ने बताया कि आत्मविश्वास और एकाग्रता ही सफलता का आधार है। श्रेष्ठ संकल्प और अच्छी आदतों को धारण करके एकाग्रता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने बच्चों को मेडिटेशन कराकर बुरी आदतों व नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा दिलाई। प्राकृतिक चिकित्सक आचार्य लवकेश द्वारा योगाभ्यास सिखाया गया। पहले उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देते हुए बच्चों को उपयोगी आसन व प्राणायाम का अभ्यास कराया। उन्होंने जंक फूड से होने वाले नुकसान के बारे में भी बताया। स्वस्थ शरीर के लिए एक चार्ट के माध्यम से पौष्टिक आहार के बारे में समझाया।

हमलावरों ने किया युवक पर नुकीले हथियार से वार

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

दो युवकों पर मारपीट करने का आरोप

झज्जर। डावला गांव के एक युवक ने गांव के दो अन्य युवकों पर मारपीट का आरोप लगाया है। पुलिस को दी शिकायत में साहिल धनखड़ ने बताया कि वह खेतीबाड़ी का कार्य करता है। बीती 18 अप्रैल को जब ग्वालिसन रोड स्थित सर्विस स्टेशन पर बैठा था तो वहां गांव के दो युवकों ने उसके साथ आकर मारपीट की। साहिल का आरोप है दोनों युवकों ने उस पर ईंट व तेजधार हथियार से हमला किया। पुलिस ने मामला दर्ज कर नियमानुसार कार्रवाई शुरू कर दी है।

लाइनपार में घर में घुसकर एक युवक के साथ मारपीट की गई। नुकीले हथियार से भी गर्दन पर वार किया गया। हमले में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया है। हमलावरों की पहचान हो गई है। लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात विक्की के साथ हुई है। नेताजी नगर के निवासी विक्की का कहना है कि वह दिहाड़ी-मजदूरी करता है। कुछ दिन पहले कॉलोनी के निवासी एक युवक के साथ कहासुनी हो गई थी। उसी कहासुनी की रंजिश में वह युवक रात करीब 11 बजे अपने तीन साथियों के साथ हमारे घर पर आया। घर के बाहर आवाज लगाकर कहने लगा कि गेट खोल, तुझ से कुछ जरूरी बात करनी है। मैंने दरवाजा खोला ही था कि चारों ने गाली गलोच शुरू कर दी। गालियों का विरोध किया तो मारपीट करने लगे। इसी दौरान एक हमलावर ने चाकू जैसे नुकीले हथियार से गर्दन पर वार किया। शोर सुनकर पत्नी बचाने के लिए आई तो उसे भी धक्का दे दिया। आसपास लोग इकट्ठे होने लगे तो चारों हमलावर जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। इसके बाद मुझे सरकारी अस्पताल में ले जाया गया। जहां से पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। उधर, सूचना पाकर पुलिस पीजीआई पहुंची और उसके बयान लिए। शिकायत के आधार पर पुलिस ने चारों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। उनकी पहचान हो गई है। पुलिस मामले की तफ्तीश में जुटी है।

प्रवासी नौकर पर नकदी व आभूषण चुराने का आरोप

झज्जर। पाटौदा निवासी एक व्यक्ति ने अपने प्रवासी नौकर पर नकदी व आभूषण चोरी का आरोप लगाया है। पुलिस को दी शिकायत में पाटौदा निवासी नरेश पुत्र कृष्ण ने बताया कि उसने करीब दो माह पहले कांसगज यूपी निवासी गोपाल को घरेलू कार्य करने के लिए नौकरी पर रखा था। बीती 23 मार्च को जब वह काम पर गया हुआ था तो उसकी मां कमलेश ने फोन पर सूचना दी कि गोपाल घर से चोरी करके भाग गया। उसकी मां का कहना था कि गोपाल ने उससे सुबह के समय एक हजार रुपये मांगे थे। रुपये देने के बाद वह राशन लेने के लिए राशन डिपो चली गई। जब वह लौटी तो गोपाल घर से गायब था और सामान बिखरा पड़ा था। नरेश के अनुसार जब उन्होंने घर में रखे सामान का जायजा लिया तो उसके घर से बक्से में रखे एक लाख नब्बे हजार रुपये सहित सोने व चांदी के आभूषण चोरी हो चुके थे। इसके बाद वे गोपाल की तलाश में उसके गांव भी गए जहां उसके भाई ने गोपाल की तलाश कर उनके सामने पेश करने व चोरी किए नकदी व आभूषण वापिस दिलाने का आश्वासन दिया। लेकिन गोपाल का कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

गाड़ी की चपेट में आने से मां-बेटी घायल

बहादुरगढ़। कंपनी से छुट्टी के बाद घर लौट रही मां-बेटी एक गाड़ी की चपेट में आ गई। दोनों को गंभीर चोट आई हैं। उनको बहादुरगढ़ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घायल की पहचान पूनम और उसकी बेटी कर्मावती के रूप में हुई है। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी से हैं और फिलहाल यहां रोहद में रहते हैं। रोहद में स्थित एक कंपनी में काम करते हैं। रात को करीब 9 बजे कंपनी से छुट्टी के बाद अपने घर जा रही थी। जब रोहद में ही सड़क पार करने लगी तो एक गाड़ी की चपेट में आ गई। इस हादसे में दोनों को गंभीर चोट आई। राहगीरों ने इनको संभाला और अस्पताल लेकर गए। जहां से इन्हें रेफर किया गया। लेकिन परिजनों ने इनको बहादुरगढ़ के एक निजी अस्पताल में भर्ती करा दिया। फिलहाल दोनों का उपचार जारी है। उधर, सूचना पाकर आसौदा थाने से पुलिस अस्पताल में पहुंची और घायलों के बयान लिए। पूनम की शिकायत पर पुलिस ने गाड़ी चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। गाड़ी का नंबर पुलिस को मिल गया है। पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

विश्व विरासत दिवस के उपलक्ष्य में रोमांचक अंतर सदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

विरासत की सुरक्षा-संरक्षण हमारी जिम्मेदारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- सभी प्रतिभागियों से इतिहास व विरासत संबंधी प्रश्न पूछे गए

शहर की एचएल सिटी में स्थित जीडी गोयनका स्कूल में विश्व विरासत दिवस के उपलक्ष्य में रोमांचक अंतर सदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस बौद्धिक उत्सव में बड़ी संख्या में मेधावी युवा छात्र शामिल हुए। उत्साही विद्यार्थियों ने दुनिया की समृद्ध सांस्कृतिक छवि तक फैले ज्ञान पर चर्चा की। स्कूल प्राचार्या डॉ. सुचित्रा भट्टाचार्या ने बताया कि भारत में शानदार ऐतिहासिक स्मारक हैं, जो हमारी संस्कृति और विविधता को परिभाषित करते हैं। स्कूल निर्देशक शैलजा जून ने बताया कि विश्व धरोहर स्थल हमारी साझा सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक मूल्यवान हिस्सा हैं। इनकी सुरक्षा और संरक्षण करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की धरती है। हमारी 42 धरोहरों को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में जगह मिल चुकी है। इस दौरान सभी प्रतिभागियों से इतिहास विरासत संबंधी प्रश्न पूछे गए। स्कूल प्रिंसिपल द्वारा विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। उनके बौद्धिक प्रयास के लिए उन्हें सराहा गया। अन्य विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया।

बहादुरगढ़। प्रिंसिपल के साथ प्रतियोगिता के प्रतिभागी विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 21 अप्रैल 2024

विशेषः पृथ्वी दिवस, 22 अप्रैल

हम सभी इस बात को जानते और समझते हैं कि हमारा वजूद पृथ्वी की वजह से ही संभव है। इसके बावजूद हमारी गतिविधियां धरती को लगातार संकटग्रस्त कर रही हैं। इसके दुष्प्रभाव दिखने लगे हैं और भविष्य में स्थितियां और भी भयावह हो सकती हैं। ऐसा ना हो, हमारी धरती और हम सभी सुरक्षित रहें, इसके लिए बिना देर किए हर किसी को प्रयास करने होंगे।

हमारे कारण संकटग्रस्त हो रही है
हमारी पृथ्वी

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

जिस धरती मां ने हमें जीवन दिया, प्राणवायु दी, पीने को पानी और खाने को भोजन दिया, आज वही अपनी जीवनरक्षा के लिए जूझ रही है। हम मनुष्यों ने स्वार्थ और सुविधाओं में खोकर इसका बेतहाशा दोहन किया है, जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। हमारी लापरवाही और स्वार्थ के कारण न सिर्फ पृथ्वी का अपने मूल स्वभाव में बने रहना दूभर हो रहा है बल्कि इसकी गति और स्वाभाविक गतिविधियां भी बाधित हो रही हैं।

गति में आ रही बाधा

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वनों की बेतहाशा कटाई, प्राकृतिक संपदा के नासमझीपूर्ण उपयोग और दोहन से धरती के सबसे ठंडे स्थान भी धीरे-धीरे गर्म होने लगे हैं। अंटार्कटिका में बर्फ पिघलने से पृथ्वी की घूर्णन गति में भी कमी आ रही है, जिससे विश्व की घड़ियां भी गड़बड़ा सकती हैं। पृथ्वी हर 23 घंटे 56 मिनट और 4 सेकेंड में अपना चक्कर पूरा करती है। इसके घूमने की गति 1674 किलोमीटर प्रति घंटा है। यह रफ्तार किसी लड़ाकू विमान जितनी है। पर पृथ्वी का आकार इतना बड़ा है कि हमें इसके घूमने का पता नहीं लग पाता। अंतरिक्ष या उपग्रहों के जरिए पृथ्वी को घूमते हुए देखा जा सकता है।

एक नए अध्ययन में पाया गया कि इसके सर्व निर्देशांकित समय (कोर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम) में से एक सेकेंड कम करने की आवश्यकता पड़ सकती है। इस अध्ययन के लेखक डंकन एग्न्यू हैं। ये अमेरिका के सेंडियागो में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भू-भौतिक विज्ञानी हैं। यह अध्ययन 'नेचर' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

नष्ट हो रहे ऑक्सीजन स्रोत

पृथ्वी पर ऑक्सीजन के मूल स्रोत पेड़-पौधे लगातार नष्ट हो रहे हैं। इसके साथ ही नदियां, समुद्र और जल संग्रह प्रदूषित और विषाक्त होते जा रहे हैं। जंगलों में आग लगने की घटनाएं दिनों- दिन बढ़ रही हैं। पिछले कई दिनों से तमिलनाडु के नीलगिरी में कुन्नूर वन क्षेत्र में जंगल की आग भड़क रही है। 1901 के बाद फरवरी 2024, दक्षिण भारत में सबसे गर्म महीना रहा है। पिछले दो महीने में दक्षिण भारत के कई राज्यों में अधिकतम, न्यूनतम और औसत तीनों ही तापमान सामान्य से ऊपर बने हुए हैं। इसी के परिणामस्वरूप सर्दियों के मौसम के दौरान भी इन वनों में शुष्क बायोमास की उपलब्धता बहुत ज्यादा है, जिसके कारण आग तेजी से फैल रही है। जंगलों में आग लगने का सबसे आम कारण मानवीय लापरवाही है। इसके अंतर्गत जलती हुई माचिस, सिगरेट के बिन बुझे टोटे को फेंकना, जंगलों में खाना पकाना, जानवरों को मारने के लिए या उन्हें डराने के लिए आग जलाना, शहद इकट्ठा करने के लिए आग लगाना आदि कारण शामिल हैं। प्राकृतिक कारणों में बिजली गिरना भी इसकी एक बड़ी वजह है। 2021 में भारत के कई राज्यों में वन अग्नि की अनेक घटनाएं देखने को मिलीं। साल 2023 में गोवा के वन क्षेत्र में बड़ी आगजनी की घटना हुई। 2024 में अब तक मिजोरम में 3738, मणिपुर में 1702, असम में 1652, मेघालय में 1252 और महाराष्ट्र में 1215 आग लगने की घटनाएं रिकॉर्ड की गईं।

बिगड़ रहा है आकार और प्रकार

पृथ्वी पर गर्मी बढ़ने से ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं। इसका असर पृथ्वी की बेस लाइन पर पड़ रहा है और इसका शेप बिगड़ रहा है। हम इतना प्रदूषण फैला रहे हैं कि 2050 तक धरती का तापमान 2 डिग्री और बढ़ जाएगा। ऐसा हुआ तो कहीं भीषण सूखा पड़ेगा तो कहीं विनाशकारी बाढ़ आएगी। ग्लेशियर पिघलकर नष्ट हो जाएंगे तो जाहिर है इसके कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा। बढ़े हुए जल स्तर के कारण कई शहर हमेशा के लिए डूब जाएंगे। आपको जानकर चिंता और हैरानी होगी कि धरती पर समस्त जीवित प्राणियों यानी जल, थल, नभ में रहने वाले पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों का कुल भार से, मनुष्य निर्मित चीजों जैसे इमारतों, मशीनों आदि का भार बढ़ गया है। इसका वजन 2040 तक तीन टेराटन हो जाएगा। एक टेरा टन यानी ट्रिलियन टन के बराबर होता है और 1 टन में हजार किलोग्राम होते हैं। इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि यह भार कितना ज्यादा होगा। प्लास्टिक का इस्तेमाल भी हम बेतहाशा करने लगे हैं। इसका दुष्परिणाम भी पृथ्वी को ही भोगना पड़ रहा है।

ऐसे बचाएं अपनी धरती

धरती मां को बचाने के लिए हम सभी को प्रण करना होगा कि अपनी धरती को बचाने के लिए कोई भी कसर नहीं छोड़ेंगे। हमें जियो और जीने दो के मूल मंत्र पर काम करना होगा। इसके लिए पशु-पक्षियों का अनावश्यक शिकार रोकना होगा। मांसाहार छोड़कर शाकाहार अपनाना होगा। प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग करने का निश्चय करना होगा। पेड़-पौधों का संरक्षण और संवर्द्धन करना होगा। पर्यावरण को गर्म करने वाली गैसों का उत्सर्जन रोकने के लिए हमें तरह-तरह के उपाय करने होंगे। इसके लिए हमें जीवनशैली को ईकोफ्रेंडली बनाना होगा। इसके तहत बेवजह बिजली का उपयोग यानी बर्बादी रोकनी होगी। जैविक ईंधन यानी पेट्रोल, डीजल, केरोसिन तेल की बर्बादी रोकने और इनका उपयोग न्यूनतम करने का प्रयास करना होगा। साथ ही सौर ऊर्जा के उपयोग की आदत डालनी होगी। वैज्ञानिकों को भी गैर जैव ऊर्जा का निर्माण करने की ओर प्रयास करने होंगे। हमें अपनी दैनिक आदतों में जीरो वेस्ट नीति अपनाने, पानी के दुरुपयोग को रोकने और कचरे का सही निस्तारण करने जैसी आदतें शामिल करनी होंगी। कुल मिलाकर धरती की सेहत तभी सुधरेगी, जब हम इसका अनावश्यक दोहन करने की प्रवृत्ति पर लगाम कसने में कामयाब होंगे। *

ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ रहा आइसक्रीम का कारोबार

साल 2022 में, भारत में आइसक्रीम बाजार का आकार 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से ज्यादा था, जबकि अगले पांच सालों में 13.49 फीसदी की सालाना वृद्धि दर का अनुमान है। वैश्विक आइसक्रीम बाजार की बात करें तो साल 2018 में यह 62.4 बिलियन डॉलर था, जबकि साल 2025 तक इसके बढ़कर 97.3 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इन दो तथ्यों से साफ है कि जैसे-जैसे धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी हो रही है, उसी रफ्तार से इंसान में गला तर करने वाली ठंडी चीजों की चाहत बढ़ रही है। इससे साफ है कि नए-नए स्वादों, प्रकारों के चलते क्या विकसित और क्या विकासशील, सभी देशों में आइसक्रीम की मांग बढ़ रही है। आइसक्रीम का ग्लोबल वार्मिंग के साथ महज विरोधाभासी रिश्ता भर नहीं है बल्कि सूक्ष्म स्तर पर ही इससे यह साबित होता है कि बढ़ रही गर्मी की बेचैनी ने इंसान को आइसक्रीम जैसी ठंडी चीजों की तरफ आकर्षित किया है।

जानकारों की माने तो साल 2024 आइसक्रीम के करोबार के लिहाज से बहुत हॉट होने वाला है, विशेषकर भारत में जहां आशंका है कि इस साल बाकी सालों के मुकाबले 20 से 22 दिनों तक ज्यादा गर्मी पड़ेगी। साथ ही 13 से 17 दिन तक ज्यादा लू चलेगी। ऐसी स्थिति में ठंडी-ठंडी आइसक्रीम का कारोबार बढ़ेगा ही। खासकर तब, जब आइसक्रीम के बाजार में नए से नए एक्सपेरिमेंट भी हो रहे हैं। इसके अलावा आज अपने देश के लगभग सभी बड़े शहरों में इंडियन आइसक्रीम एक्सपो आयोजित होने लगे हैं। इंडियन मैरिज बाजार के अध्ययन के मुताबिक पिछले एक दशक में शादियों में आइसक्रीम का चलन 20 फीसदी तक बढ़ा है और खान-पान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आइसक्रीम बन गई है। यह भी देखने में आ रहा है कि अब सिर्फ बच्चे ही आइसक्रीम के दीवाने नहीं हैं, अपने देश में होने वाली शादियों में 35 फीसदी से ज्यादा आइसक्रीम बूढ़े और अधेड़ खाते हैं।

डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक दोनों इस निष्कर्ष से सहमत हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते लोगों में गर्मी के एहसास की जो बेचैनी बढ़ी है, उस वजह से लोगों में मीठा और ठंडा खाने की ललक बढ़ रही है। मतलब साफ है कि जब आसमान से आग बरसेगी तो लोग खुद को तरोताजा रखने के लिए आइसक्रीम जैसी ठंडी चीजों की तरफ आकर्षित होंगे ही। -नयनतारा

महेंद्र सिंह धोनी क्रिकेट के सुपर स्टार्स में शामिल हुए हैं तो इसकी वजह है, उनकी पर्सनालिटी में शामिल कुछ विशेष गुण। इन गुणों को सीखकर आप भी अपनी फील्ड में सफल लीडर बन सकते हैं।

लीडरशिप के कई गुण हमें सिखाते हैं महेंद्र सिंह धोनी

{ मोटिवेशन / अतुल मलिकराम }

अपने क्षेत्र विशेष में किसी न किसी व्यक्ति के ऊपर लीडरशिप का जिम्मा होता ही है। मायने यह रखता है कि वह उसे निभाता किस तरह से है? इस लिहाज से सबसे पहले याद आने वाले नामों में महेंद्र सिंह धोनी का नाम भी शामिल है। धोनी की लीडरशिप क्वालिटीज के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

उदाहरण से लीड करना : उदाहरण के तौर पर नेतृत्व करना धोनी की लीडरशिप की सबसे महत्वपूर्ण खूबियों में से एक है। धोनी के भीतर हमेशा ही अटूट समर्पण, अविश्वसनीय कार्य नीति और अत्यधिक शांत रहकर अच्छा काम करने की कला रही है। निरंतर सुधार के लिए उनकी प्रतिबद्धता और लगातार शानदार परफॉर्मेंस देने की उनकी क्षमता हमेशा ही उनके साथियों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित करती है।

दृढ़ विश्वास से निर्णय लेना: सामान्य स्थिति से परे, विशेष रूप से दबाव में धोनी की निर्णय लेने की क्षमता तारीफ के काबिल है। चाहे वह एक साहसिक टीम का चयन हो, बैटिंग के ऑर्डर का एडजस्टमेंट हो या फिर एक खेल की दिशा बदलकर रख देने वाला कदम, धोनी ने हमेशा अपनी प्रवृत्ति का समर्थन किया और दृढ़ विश्वास के साथ निर्णय लिया। इस अटूट आत्म-विश्वास ने न सिर्फ उन्हें सम्मान दिलाया, बल्कि उनकी टीम में आत्मविश्वास भी जगाया। अपने फैसले पर भरोसा करना और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहसिक निर्णय लेना हम उनसे सीख सकते हैं।

संयम बनाए रखना: जब दबाव की अधिकता हो, ऐसी स्थिति में धोनी का शांत और संयम वाला व्यवहार सबसे अलग निखरकर आता है। उन्होंने कभी भी स्थिति की गंभीरता को खुद पर हावी नहीं होने दिया, बल्कि हमेशा ही अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए तर्कसंगत निर्णय लिया और अपनी क्षमता से सभी को चकित किया। धोनी का धैर्य हमें चुनौतीपूर्ण समय के दौरान समभाव बनाए रखना सिखाता है।

विनम्रता से काम लेना: अपनी अविश्वसनीय उपलब्धियों के बावजूद धोनी हमेशा ही जमीन से जुड़े और विनम्र बने रहते हैं। वे कभी भी अपनी सफलता का श्रेय स्वयं को नहीं देते हैं, बल्कि अपनी टीम के सामूहिक प्रयासों को देते हैं। लीडर के रूप में, हमें भी विनम्रता से काम लेना चाहिए।

अनुकूलनशीलता और नवीनता: बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने की धोनी की क्षमता और उसके अनुसार नई रणनीतियों के प्रति उनका झुकाव उन्हें अन्य सभी लीडर्स की भीड़ से अलग करता है। स्थिति को देखते हुए हमेशा नए तरीकों की तलाश में रहने वाले धोनी, नई रणनीति और तकनीकों के साथ प्रयोग करने से कभी नहीं डरते हैं। सभी लीडर्स में बदलाव को अपनाने का गुण होना चाहिए।

प्रभावी संवाद: धोनी के लीडरशिप के गुण में कम्युनिकेशन की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। उनके पास अपने विचारों को स्पष्ट रूप से और संक्षेप में यह सुनिश्चित करने की क्षमता है कि टीम का प्रत्येक सदस्य अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझे। लीडर्स को चाहिए कि वे प्रभावी कम्युनिकेशन स्किल्स विकसित करने का प्रयास करें, जिससे एक ऐसा वातावरण तैयार हो सके, जहां विचारों का स्वतंत्र रूप से प्रवाह हो और सहयोग को बढ़ावा मिले।

सुनने की क्षमता : धोनी के लीडरशिप के गुणों में से एक है शांति से टीम के सदस्यों की बात सुनने की क्षमता। वे हमेशा ही अपनी टीम के सदस्यों की राय को महत्व देते हैं, उनसे मिलने वाली प्रतिक्रिया को स्वीकार करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करते हुए निर्णय लेते हैं। कुशल लीडर में यह कला होनी चाहिए।

दूसरों को प्रेरित करना: धोनी के पास अपनी टीम के सदस्यों को प्रेरित करने की अनूठी क्षमता है। वे टीम को अपनी क्षमताओं में विश्वास पैदा कराने का बखूबी हुनर रखते हैं। वे अपनी टीम को चुनौतियों से पार पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लीडर के रूप में, हमें चाहिए कि हम अपनी टीम को हमेशा प्रेरित करने का प्रयास करें।

रोल मॉडल बनें: धोनी की लीडरशिप की विशेषता उनके रोल-मॉडल बनने संबंधित व्यवहार से भी है। वे अनुशासन और समर्पण के लिए उच्च मानक स्थापित करते हुए, अपनी टीम के सदस्यों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहने की ताकत रखते हैं। लीडर के रूप में, हमें भी अपने लोगों को प्रेरित करते हुए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रयास करना चाहिए। *

{ कविता / डॉ. नवीन दवे मनावत }

बचाने को धरती

वन सूख रहे हैं
पेड़ तरस रहे हैं पानी को
नदियां कर रहीं विलाप
पर्वत गा रहे दुखड़ा
तुम आओ शकुंतला एक बार।
इनको सहलाने, बहलाने
सुनने को क्षणिक पीड़ा
प्रकृति के साथ एक बार फिर रिश्ता
स्थापित करो
मानव को समझाने के लिए आओ।
हे शकुंतले !
कण्व ऋषि का आश्रम
अब बन गया है
अट्टालिकाओं का शहर
हवन कुंड बन गए हैं
कारखानों की चिमनियां
मंत्र ध्वनियां बन गई हैं युद्ध
की मिसाइलें
धर्म बन गया दानव।
सीता तुम भी आओ वन में एक बार
उज्ज्वल करने वाल्मीकि आश्रम को
समता, ममता स्थापित करने को
लव-कुश तुम रोको
विनाश के अश्वमेध को
तुम्हें बुला रही हैं वहीं पेड़
की टहनियां
जिससे बने थे धनुष और बाण
करने को दमन पाप।
ओ वनपुत्रों तुम रोको
शहर की ओर
बढ़ते कदमों को, सहेजो प्रकृति को
जिसने दिया अनुपम आश्रम
रोको और टोको
रोकना-टोकना जरूरी है
बचाने को धरती
रहने को मानवता...

{ कहानी / यशोधरा भटनागर }

एलबम

पति के गुजरने के बाद वह अकेली रह रही थीं। चारों बच्चे उनसे दूर अपने-अपने जीवन में मशगूल। बच्चों के स्नेह को तरसती, यादों के सहारे जीती एक वृद्धा की मार्मिक कहानी।

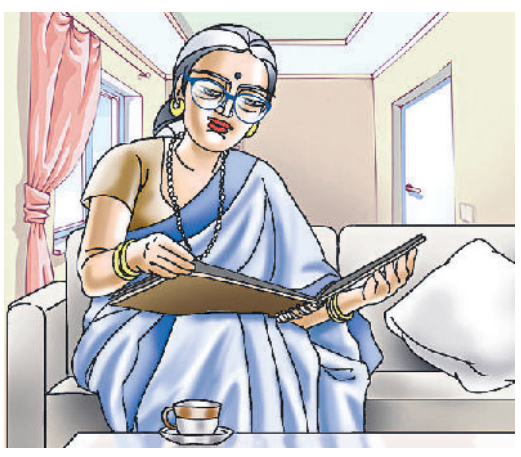

बेचैनी और घबराहट भरी खाली-खाली रात के बाद सुबह आई, अलसाई सुबह। किसी काम में मन नहीं लग रहा था। बेमन से ही अपनी दिनचर्या को निभाती हुई बगीचे में लाल गुलाब, मोगरा, हरी-हरी दूब से दो बातें करने चल दीं। जल बिंदु पुष्प पंखुड़ियों पर, हरी दूब पर दमकने लगे, हवा के हल्के से झोंके के साथ मन भी बहने लगा। कमर में खोंसा हुआ मोबाइल निकाल कर, चश्मा ठीक करके एक बार फिर देखा कि कोई फोन तो नहीं...। सामने गुलमोहर पर बुलबुल अपने बच्चों को उड़ना सिखा रही थी। वे एकटक देखने लगीं और विचारों की एक लंबी कड़ी जुड़ गई... विचार श्रंखला में उलझा मन। तभी गेट बजा, जरूर 'भूरी' होगी। तंद्रा टूटी, विचारों का ताना-बाना विच्छिन्न हो गया।

अपने सींगों से 'भूरी' गेट टनटना देती है। बिना नागा इसी समय रोटी लेने आती है यह 'भूरो', अपने भूरे रंग से गोमाता ने यह संज्ञा पा ली थी। 'भूरी' के पीछे-पीछे टॉमी भी जूली और चार बच्चों के साथ दुम हिलाते हुए पहुंच गया। सुमी रसोई घर की ओर चल दीं। रात को ही अपनी दो रोटियों के साथ भूरी और श्वान परिवार के लिए भी रोटियां बनाकर रख लेती हैं।

भूरी के सिर पर हाथ फेर, टॉमी को पुचकार वे कमरे में आराम कुर्सी पर बैठ गईं। चाय ठंडी हो गई थी, दो घूंट में गटक ली फिर मोबाइल उठाकर उसमें झांका, कोई मिस्ड कॉल तो नहीं? यूं भी कोई कॉल मिस न हो जाए, वे रात भर सोई ही कहां?

नाश्ता तो बनाना ही होगा, ब्लड प्रेशर की टेबलेट जो लेनी है। उदासीनता ओढ़े हुए, बेसन का घोल तैयार कर, तवे पर दो चीले बना लिए।

इससे जल्दी और सुगमता से शायद और कुछ नहीं बन सकता था। साथ ही अदरक वाली चाय भी चढ़ा ली। वे कभी भी चाय के बिना नाश्ता नहीं करती थीं। इसी बीच फिर मोबाइल में झांक आईं। पहले तो मोबाइल फोन अपने संग ही सहेजे रहती थीं, पर जब से बड़ी ने समझाया तो...। शायद मोबाइल खराब हो गया है...। ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि मेरे चारों बच्चों में से किसी ने भी अपनी मां को फोन न किया हो।

पति के गुजर जाने के बाद बड़े-बड़े चार कमरों वाले घर में सुमी अकेली ही रहती थीं। अड़ोसी-पड़ोसी दादी की खोज-खबर लेते रहते थे। उनके अपने सरल-मृदु स्वभाव के कारण वे मोहल्ले भर की 'दादी', 'अम्मा', आंटी बन गई थीं। उनकी अपनी बिटिया की उम्र की रेणु के लिए आंटी से मां हो गई थीं।

फिर भी अपनी संतान को क्षण भर भी नहीं बिसार पातीं, बेटियां तो पराई होती हैं, परवश हैं....। अपना घर-परिवार छोड़कर बार-बार मायके कैसे आ सकती थीं, बड़ी भी और छोटी दोनों समझाती हैं। दिन में दो-तीन बार फोन पर बात कर लेती हैं, पर यह मुआ शनिवार-इतवार काम ज्यादा होता है न, नौकरी वाली हैं दोनों। एक इतवार ही तो मिलता है, उसमें भी ढेरों काम और सब की ढेरों फरमाइश है, पूरी करने में...।

बेटे से बात की थी, आठ दिन हो गए...। खाली मन और खाली हो गया।

चाय के साथ नाश्ता गटक कर, पुरानी भूरे कवर और काले पन्नों वाली एलबम लेकर बैठ गए पहला... दूसरा... तीसरा पृष्ठ... चारों बच्चे उनके साथ उन्हें घेरे हुए बैठे थे और 'छोटी' तो गोद में ही थी, बड़ा गले में बाहें डाले खड़ा था, तुनकमिजाज 'बड़ी' दाहिनी ओर मुंह फुलाए बैठी थी। गोल-मटोल 'छोटा' बलपूर्वक मां की गोद में आने की कोशिश में थोड़ी सी जगह में ही संतुष्टि पा गया था।

एक मुस्कुराहट के साथ उन्होंने अपना चश्मा उतार कर साफ किया और निगाह झांड़ू-पोछा लगाती गुड्डो पर टिक गई, पिछले पांच बरस से यही सारा काम संभाल रही है, पर उन्होंने उसे नौकरानी कभी नहीं समझा। धीरे से बोलीं, 'बेटा मेरे साथ कॉम्प्लेक्स चल न! मेरा मोबाइल ठीक कराना है। देख न, कोई फोन ही नहीं आता इसमें...' *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

कविताओं में मुगल स्त्रियां

पवन करण की कविताओं में स्त्री जीवन के बाह्य और मनोजगत की गहन छवियां पहले भी प्रकट होती रही हैं। लेकिन उनका नया कविता संग्रह 'स्त्री मुगल' इस लिहाज से और विशिष्ट है कि यह मुगलकालीन स्त्रियों पर केंद्रित एक शोधपरक काव्यात्मक दस्तावेज के रूप में सामने आया है। इसमें अनेक ऐसी मुगलकालीन महिलाओं पर मार्मिक कविताएं हैं, जिनके बारे में आम लोग प्रायः न के बराबर जानते हैं। छोटी-छोटी कविताओं के जरिए पवन ने इतिहास में कहीं विलीन हो चुकी महिलाओं को भावनात्मक शब्दांजलि देने का प्रयास किया है। कहने की जरूरत नहीं कि कवि का यह प्रयास भी ऐतिहासिक महत्व का साबित होगा। *

पुस्तकः स्त्री मुगल(कविता संग्रह), **लेखकः** पवन करण, **मूल्यः**299 रुपए,
प्रकाशकः राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

अगर आपकी है रचनात्मक लेखन में रुचि

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेचन और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से। हमें दिल्ली में अपने फीचर विभाग के लिए आवश्यकता है-

- वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक
- प्रशिक्षु उप संपादक
- हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर भी आवेदन कर सकते हैं।

यथाशीघ्र अपना बायोडाटा मेल करें-
E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित

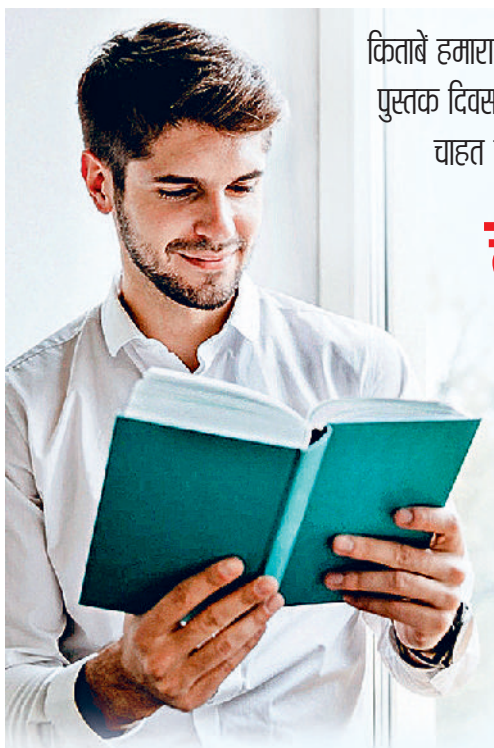

किताबें हमारा सिर्फ मनोरंजन नहीं करतीं, हमें ज्ञान नहीं देतीं बल्कि बेहतर मनुष्य होना भी सिखाती हैं। इसीलिए विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। लेकिन बीते कुछ दशकों से देश-दुनिया में लोग किताबों से दूर होते जा रहे हैं, पढ़ने की चाहत घटती जा रही है। इसकी क्या हैं वजहें, इसके दुष्परिणामों के बारे में हम सभी को पता होना चाहिए।

चलिए फिर से कर लें किताबों से दोस्ती

विशेषः विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल

लाइफस्टाइल / दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

अब से तीन दशक पहले सन 1995 में पेरिस में यूनेस्को द्वारा हर वर्ष 23 अप्रैल 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। इसके पीछे का उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान की संवाहक के रूप में पुस्तक की महत्ता के बारे में दुनिया को बताना था। अपने देश की बात करें, तो पिछली सदी में नवें दशक के पूर्वार्द्ध तक किताबें ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में अपना दखल रखती थीं। पुस्तकें हम सभी के जीवन में बहुत महत्व रखती थीं। लेकिन हाल के वर्षों में जो रीडरशिप सर्वे हुए, उससे यह तथ्य उभर कर सामने आया कि पुस्तकों के प्रति लोगों की रुचि निरंतर घटती जा रही है। बढ़ती साक्षरता दर के बीच कम होती अध्ययनशीलता, चौंकाने वाली सच्चाई है।

इसलिए बढ़ रही किताबों से दूरी

अध्ययनशीलता का विकास बचपन में ही होता है। लेकिन बाजारवाद के इस दौर में बचपन का अर्थ 'शानदार करियर के लिए संघर्ष' में सिमट गया है। इस वजह से बच्चों को विद्यालय, अभिभावक और ट्यूटरों के दबाव में अनचाहे उबाऊ पाठ्य पुस्तकों में रमना पड़ रहा है। यह स्थिति बच्चों में पुस्तकों के प्रति वितृष्णा पैदा कर देती है और वह स्वाभाविक पाठक नहीं बन पाते। यही वह 'अल्फा पीढ़ी' है, जो टीवी, मोबाइल, कंप्यूटर और इंटरनेट की दीवानी हो रही है।

किताबों का प्रभाव

वैसे इलेक्ट्रॉनिक/डिजिटल माध्यम की महत्ता से इंकार नहीं कर सकते हैं, लेकिन इनकी एक सीमा है। यह विषय के बाहरी रूप से तो परिचित करा सकते हैं, लेकिन अंतरंग का दर्शन कराने में उतना ही कमजोर हैं। इसके विपरीत किताबें हैं, जिनकी पैनी निगाह से जीवन का कोई भी रंग या आयाम अदृश्य नहीं रह पाता है। मनोविज्ञानियों का स्पष्ट मत है कि पुस्तकें सिर्फ ज्ञान और मनोरंजन का ही साधन नहीं होती हैं, बल्कि यह दिमाग चुस्त-दुरुस्त रखने का श्रेष्ठ माध्यम हैं। यह व्यक्तित्व लचीला बनाती हैं और जीने के नए-नए तरीके सिखाती हैं। दृश्य माध्यम व्यवहार के सामूहिक पक्ष को खारिज करके व्यक्तिवादी पक्ष को प्रबलित करता है। नई पीढ़ी में सामाजिक मूल्यों के प्रति घटती आस्था और स्वहित के लिए कुछ भी करने की प्रवृत्ति इसी की देन है।

विकसित हो रही दुष्प्रवृत्तियां

बच्चे, किशोर और युवा वर्ग पुस्तकों से दूर हुआ है तो इसके दुष्परिणाम भी खूब दिखने लगे हैं। किशोरों और युवाओं में हिंसा, आक्रोश, आक्रामकता, अवमानना, कामुकता जैसी प्रवृतियों की हैरतअंगेज स्तर पर वृद्धि हुई है। देश में विगत वर्षों में पुस्तक दिवस पर बुक स्टॉलों पर कुछ खास हलचल नहीं दिखती। फ्रेंडशिप-डे, वैलेंटाइन-डे जैसे मौकों पर युवावर्ग में जो उत्साह और खरीददारी की ललक दिखती है, उसका दशांश भी पुस्तक दिवस को समर्पित हो जाए तो क्या कहने!

फिर लौटें किताबों की ओर

पाठक और पठित सामग्री की एकात्मकता संस्कार निर्माण की नींव है। विद्वान विचारकों का अभिमत है कि जीवन में आस्था, विश्वास और मूल्यों की स्थापना की सशक्त स्रोत पुस्तकें ही हैं और यही रहेंगी। इसका विकल्प कोई अन्य माध्यम नहीं बन सकता। प्राचीन विचारकों ने तो यहां तक कहा है कि पुस्तक जहां रखी होती है, वह स्थान विचारों, सिद्धांतों और अवधारणाओं का संगम होता है। हमारी दिमागी क्षमता के लिए पुस्तकें उपयोगी पोषक तत्वों जैसा काम करती हैं। संभवतः इसीलिए कहा गया है कि पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। इस दृष्टि से हमारी दिनचर्या में किताबों की वापसी हमारी प्राथमिकता बननी चाहिए।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सूचना क्रांति के इस दौर और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की चकाचौंध के बीच भी शब्दों की महत्ता न घटी है और न घटेगी। क्योंकि शब्द ही हैं, जो हमें जहां हम हैं, उससे आगे निकलने की राह दिखाते हैं। शब्दों की इसी महत्ता को रेखांकित करके किताबों को पुनः जनाधार देने का उपक्रम है, 'विश्व पुस्तक दिवस।' मगर इस उद्घोषणा का महत्व तभी होगा, जब देश के पुस्तक बाजार में इसको लेकर सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखेगी।

पुस्तकों के प्रति घटती जनरुचि के संदर्भ में अकसर उसकी कीमत को दोष दिया जाता है। लेकिन तीन-चार हजार का जूता खरीदने या दोस्तों के साथ फास्ट फूड पार्टी में हजारों रुपए खर्च करने वालों को चार-पांच सौ रुपए की किताबें क्यों महंगी लगती हैं, यह समझ से परे की बात है। वास्तव में मामला महंगाई का नहीं, प्राथमिकता का है। हम महंगे उपहार देते हैं, उसमें एक-दो पुस्तकें क्यों नहीं शामिल की जा सकती हैं? यह महत्वपूर्ण आयोजन तब तक अर्थहीन है, जब तक हम पुस्तकों की तरफ नहीं लौटेंगे। अगर हम संकल्प लें कि रोज कुछ न कुछ पढ़ना है तो इससे बच्चे और किशोर भी प्रेरित होंगे। एक बार यह सिलसिला चल निकलने की देर है, फिर किताबें अपना पुराना मुकाम प्राप्त कर लेंगी। *

ऐसे पड़ी पुस्तक दिवस की नींव

पश्चिमी देशों में पुस्तकें पढ़ने का चलन पिछली सदी में काफी पहले से कम होने लगा था। वहां नवें दशक तक आते-आते युवा वर्ग के व्यवहार में कई तरह के नकारात्मक परिवर्तन दिखने लगे थे। शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के दबाव में कई सर्वेक्षण हुए, जिससे पता चला कि नई पीढ़ी में किताब पढ़ने की आदत एकदम कम हो गई थी। ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बढ़त बना चुके थे। इसलिए उनके व्यावहारिक जीवन में संवेदना, आत्मनियंत्रण और धैर्य का स्तर काफी कम हो गया था। सर्वेक्षणों से यह निष्कर्ष भी निकला कि जो किशोर साहित्य नहीं पढ़ते, कंप्यूटर खेलों और छोटे पर्दे के साथ अपना समय निकाल देते हैं, वे संवेदना, सौंदर्यबोध और कल्पना के मामले में कमजोर हो जाते हैं। एक तरफ युवा वर्ग में मूल्यों का संकट बढ़ रहा था तो दूसरी ओर पुस्तकों के अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडरा रहे थे। इस बात से चिंतित स्पेन की सरकार ने किताबों के पक्ष में सकारात्मक माहौल बनाने की दृष्टि से 'यूनेस्को' को एक प्रस्ताव भेजा। इसके पूर्व 'अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ' भी पुस्तकों के घटते जनाधार को संभालने के लिए यूनेस्को को आगे लाने का प्रयास कर चुका था। परिणामस्वरूप विचार-विमर्श के बाद विलियम शेक्सपियर और स्पेन के लोकप्रिय लेखक मीगुयेल डी सर्वेंटाइन की पुण्यतिथि 23 अप्रैल को प्रतिवर्ष 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने का फैसला लिया गया।

सीख लें कुछ नया संवर उठेगा जीवन

अनेक अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि नई-नई स्किल सीखने से जीवन में नयापन, सकारात्मकता आती है और सफलता की नई राह खुलती है। 21 अप्रैल विश्व नवाचार और रचनात्मकता दिवस पर हम बता रहे हैं, नई स्किल सीखने के फायदे।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

अंजू जैन

नयापन हर किसी को भाता है। इसकी वजह है कि हम सब दैनिक उपयोग की पुरानी चीजों, पुराने कपड़ों, पुराने फैशन और पुराने रूटीन से कई बार ऊब जाते हैं और जिंदगी में कुछ नयापन चाहते हैं। नवाचार और रचनात्मकता हमें उत्साह और ऊर्जा तो देती ही है, हमें इनसे आंतरिक खुशी, आत्मविश्वास और जीवन में नई सफलताएं भी मिलती हैं। आप भी चाहें तो कोई नई स्किल सीखकर जिंदगी में नई ताजगी ला सकते हैं, नई राह खोल सकते हैं।

वाद्य यंत्र बजाना

दुनिया में कई शोध हो चुके हैं, जिनके नतीजे बताते हैं कि वाद्य यंत्र बजाने से मनोरंजन के साथ-साथ बौद्धिक क्षमता भी बढ़ती है। मनोवैज्ञानिक और व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, वाद्य यंत्र सुनने से ही नहीं बजाने से भी मन को सुकून मिलता है। इससे अवसाद, तनाव और उदासी से भी मुक्ति मिलती है। साथ ही जो विद्यार्थी वाद्य यंत्र बजाते हैं या सुनते हैं उनकी मेमोरी शार्प होती है और पढ़ाई-लिखाई में एकाग्रता भी बढ़ती है।

नई भाषा सीखना

आज दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन चुकी है। इंटरनेट के जरिए या फिर वास्तविक रूप में भी दुनिया के विभिन्न हिस्सों तक हमारी पहुंच आसान हो चुकी है। हम विदेशों में अपने दोस्त बना रहे हैं, पर्यटन करने या पढ़ने के लिए विदेश जा रहे हैं और विदेश से व्यापार भी खूब हो रहा है। ऐसे में विदेशी भाषा सीखना बेहद फायदेमंद होगा। मनोविज्ञानियों का कहना है कि एक से ज्यादा भाषा सीखने वालों की बौद्धिक क्षमता, याददाश्त और एकाग्रता का स्तर बढ़ जाता है। साथ ही यह एक अतिरिक्त योग्यता भी होगी और विदेश में स्टडी या जॉब भी आसान बनाएगी।

स्पीड रीडिंग

हो सकता है, आप सोच रहे हों कि रीडिंग भी भला सीखने की चीज है? लेकिन स्पीड रीडिंग वाकई एक उपयोगी स्किल है। इसमें आप जल्दी-जल्दी पढ़ना और पढ़े हुए को आत्मसात करना सीखते हैं। इससे आपका समय बचता है और आप कम समय में ज्यादा पढ़ सकते हैं। जाहिर है, इससे छात्रों को स्टडी में काफी फायदा होगा। इस कला में आप किसी लेख, कहानी या टेक्स्ट के बिंदु बनाने और उसे संक्षेप में लिखकर या चंद वाक्यांशों में लिखकर याद करने की कला भी सीख सकते हैं।

आर्ट ऑफ जगलिंग

आपने किसी सर्कस या टीवी शो में जोकर को एक साथ कई गेंदों को ऊपर उछाल कर दोनों हाथों से एक-एक कर पकड़ना और फिर से उछालने का कमाल देखा होगा। यह कला जगलिंग कहलाती है। जगलिंग सीखने और इसका अभ्यास करने से बौद्धिक क्षमता और एकाग्रता बढ़ती है।

कुकिंग आर्ट

उम्र का बंधन किसी भी स्किल को सीखने के लिए नहीं होता है। आज की तारीख में दुनिया में कई बुजुर्ग ही नहीं बच्चे भी लजीज व्यंजन न सिर्फ पका रहे हैं बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सिखाकर सेलिब्रिटी शेफ जैसा दर्जा पा चुके हैं। हेल्दी और सेफ कुकिंग एक कला है, जो आपको डिसिप्लींड और ऑर्गेनाइज्ड रहना सिखाती है। साथ ही आपको टीमवर्क, माइंडफुलनेस प्लानिंग और हेल्थ कॉन्शस होना भी सिखाती है।

डिजिटल स्किल

दुनिया पूरी तरह डिजिटल हो चुकी है। कम्युनिकेशन, पढ़ाई, लिखाई, काम-काज, पेमेंट लेना या देना या शॉपिंग लगभग सब कुछ डिजिटल हो चुका है। जाहिर है, आज की दुनिया में आपको एक समझदार और सजग नागरिक बनना हो या करियर की राह पर सफल होना हो तो आपकी डिजिटल स्किल का लेवल बढ़िया होना चाहिए। संभव हो तो आपको कोडिंग भी सीखनी चाहिए। इससे आपकी टेक्नोलॉजी की समझ बढ़ेगी और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल भी इंप्रूव होगी। *

बहुत मुश्किल नहीं डर को हराना

किसी न किसी चीज या स्थिति से डर तो सबको लगता है। लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक तरीकों से अपने डर को हराया जा सकता है। यकीन मानिए, ऐसा करना बहुत कठिन भी नहीं है।

साइकोलॉजी / विवेक कुमार

डर कितना ही बड़ा क्यों न हो, उस पर जीत पाई जा सकती है, बस उसके लिए हमें कुछ मनोवैज्ञानिक तौर-तरीकों से गुजरना होता है। वैसे डर को लेकर समाज में बहुत गलत धारणाएं फैली हुई हैं। आमतौर पर लोगों का मनोविज्ञान यह है कि डरपोक लोगों को डर ज्यादा लगता है और बहादुर लोग डरते नहीं। यह सही बात नहीं है। डर एक जन्मजात और शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इसका हमारे हिम्मती या गैरहिम्मती होने से कोई लेना-देना नहीं होता बल्कि अगर कोई व्यक्ति डरता है तो इसका मतलब यह है कि उसके शरीर में स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो रही है। लेकिन जैसे हर चीज की एक सीमा होती है, डर की भी एक सीमा होती है। अगर डर उस सीमा के आगे बढ़ जाए तो वह डर नहीं रहता। इसलिए सीमा से आगे बढ़ा हुआ डर नुकसानदायक होता है और उसके निवारण की जरूरत होती है।

संभव है डर से छुटकाराः जब भी डर के बारे में सोचें तो यह मानकर चलें कि डर कितना ही बड़ा और जटिल क्यों न हो, उससे छुटकारा पाना संभव है। हम सब बचपन में अंधेरे से डरते हैं, कॉकरोच से या छिपकली से डरते हैं। ऊंचाई से भी डरते हैं और ये सिर्फ बच्चों की बात नहीं है, बड़े होने पर भी बहुत लोग इन सब चीजों से डरते हैं। लेकिन अगर इन सभी चीजों को धीरे-धीरे प्रैक्टिस से समझें तो डर दूर हो जाता है। दरअसल, डर से हमारी मुलाकात जन्म लेते ही हो जाती है। पैदा होने के बाद से ही किसी भी शिशु में असुरक्षा की भावना आ जाती है। भूख लगने पर वह जोर-जोर से रोने लगता है। रोना दरअसल, उसकी असुरक्षा की अभिव्यक्ति है। इसलिए जब भी उसे भूख लगती है, वह रोने लगता है। लेकिन पेट भरा होने पर नहीं रोता। ऐसे ही बिस्तर गीला हो जाने पर भी रोता है, लेकिन गीले बिस्तर से मां उठा ले तो वह चुप हो जाता है। यानी, हम जैसे ही अपने सुरक्षातंत्र में पहुंच जाते हैं, भय खत्म हो जाता है।

ऐसे मिलेगी भय से मुक्तिः किसी भी डर से छुटकारा वैज्ञानिक तरीके की परवरिश से ही मिलती है। जैसे हम अंधेरे में डरते और अंधेर में उजाला हो जाए तो डर दूर हो जाता है। ठीक इसी तरह हमारा कमजोर दिल-दिमाग जिन सवालों के जवाब नहीं ढूढ़ पाता है, उससे हमें डर लगता है। इसमें मां-बाप की भी भूमिका होती है। अकसर मां-बाप छोटे बच्चों को शरारत न करने के लिए छोटी-छोटी बातों से डराते रहते हैं। जैसे-बाबा आएगा और झोली में डालकर ले जाएगा। छोटे बच्चे इस वजह से किसी भी अंजान व्यक्ति को देखते ही डर जाते हैं। लेकिन बड़े होने पर पता चलता है कि उनका डर बेबुनियाद था। इसलिए बच्चों की परवरिश में ऐसी झूठी बातों के इस्तेमाल से बचना चाहिए।

अधिकांश होता है भविष्य का डर : डर आमतौर पर भविष्य से जुड़ा होता है। मैं लिफ्ट में जाऊंगा तो कहीं फंस ना जाऊं। मैं मीटिंग में सबके सामने बोलूंगा तो कहीं गलती तो नहीं हो जाएगी, लोग मुझ पर हंसेंगे तो नहीं। ये ऐसे डर हैं, जो आमतौर पर हम सबको लगते हैं और हम इनके बारे में सोच-सोचकर डरते रहते हैं। अगर हमारे मन में किसी तरह के संक्रमण की आशंका बैठ जाए, तो एक छींक आते ही हम बहुत डर जाते हैं, लगता है हमें इस संक्रमण ने जकड़ लिया। इंटरव्यू देने जाते वक्त हम इसलिए डर जाते हैं कि हमारे मन में ऐसे सवालों की चेन चलती रहती है, जो सवाल अभी तक हमसे न तो पूछ गए हैं और हो सकता कभी न पूछे जाएं। खुद ही हम इंटरव्यू देने जाने के समय डर जाते हैं। हम या तो बिना किसी वजह के डरते हैं या राई का पहाड़ बना लेते हैं। अगर हमारे मन में यह भाव मजबूती से बैठा हो कि जब कोई बात सामने आएगी, तब देखी जाएगी, तो हमें भविष्य से कभी डर ही नहीं लगेगा।

डर की कल्पना से बचें: मन बहुत कल्पनाशील होता है, इसलिए मामूली चीजें भी कई बार बहुत बड़ी समस्या बन जाती हैं। खतरा न होते हुए भी खतरे की घंटी सुनाई पड़ने लगती है। तभी तो मन रस्सी को कल्पना करते ही सांप समझ लेता है। दूसरी तरफ जो कल्पना से नहीं डरता, जिसमें डरावनी भावनाएं नहीं होतीं वो डरावनी परिस्थिति का भी जमकर मुकाबला करता है। मतलब यह कि डर जितना होता है, उससे कहीं ज्यादा हमारी कल्पना से बढ़ जाता है। इसलिए डर की कल्पना से बचना चाहिए। *

खास मुलाकात

पूजा सामंत

अपने दौर की स्टार हीरोइन मीनाक्षी शेषाद्रि, शादी बाद अमेरिका में सेटल हो गई थीं। वह सत्ताइस साल बाद भारत लौटी हैं, फिर से फिल्मों में काम करेंगी। मीनाक्षी अब किस तरह के रोल करना चाहेंगी? फिल्म इंडस्ट्री में वह क्या बदलाव देख रही हैं? क्या वह ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी काम करना पसंद करेंगी? मीनाक्षी शेषाद्रि से बहुत खुलकर बातचीत।

मैं ऐसे किरदार करना चाहूंगी, जो मुझे एक अलग पहचान दे : मीनाक्षी शेषाद्रि

मीनाक्षी शेषाद्रि ने मनोज कुमार निर्मित फिल्म 'पेंटर बाबू' से 1983 में फिल्मों में कदम रखा था। उसी वर्ष मीनाक्षी की जैकी श्रॉफ के साथ निर्माता-निर्देशक सुभाष घई की फिल्म 'हीरो' रिलीज हुई थी। इस फिल्म ने मीनाक्षी और जैकी को रातों-रात स्टार बना दिया। इसके बाद मीनाक्षी ने कई सुपरहिट फिल्में दीं। उन्होंने अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, जितेंद्र, ऋषि कपूर, गोविंदा, विनोद खन्ना, राजेश खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा जैसे नामी स्टार्स के साथ काम किया। 1995 में मीनाक्षी ने इंवेस्टमेंट बैंकर हरीश मैसूरे के साथ विवाह कर लिया और उनके साथ अमेरिका में सेटल हो गईं। सत्ताइस वर्षों बाद वह भारत लौटी हैं। उन्होंने एक फिल्म साइन की है। पेश है मीनाक्षी शेषाद्रि से हुई बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी शुरुआती दो फिल्मों ने रिलीज के चालीस वर्ष पूरे कर लिए हैं। विवाह के बाद आप अमेरिका में सेटल हुईं। आपकी बॉलीवुड में वापसी पूरे सत्ताइस वर्षों के बाद हो रही है। अपने कमबैक को लेकर आप क्या कहेंगी?

हां, 'पेंटर बाबू' और 'हीरो' मेरी ये दोनों फिल्में 1983 में रिलीज हुई थीं। इनके चार दशक पूरे होने की मुझे बहुत खुशी है। फिल्म 'हीरो' ने मुझे स्टारडम दिलाया। फिल्म 'पेंटर बाबू' मुझ जैसी न्यूकमर को लाइमलाइट में लाई। इसके बाद राजकुमार संतोषी जी की 1993 में फिल्म 'दामिनी' रिलीज हुई थी, उसके बाद 1996 में 'घातक' रिलीज हुई। मेरे करियर की ये आखिरी दो फिल्में थीं। 1995 में मेरी शादी हुई फिर मैं अपने वैवाहिक जीवन में बिजी हो गई। बेटी केंद्रा, जो इस वक्त पचीस वर्ष की है, पढ़-लिखकर जॉब कर रही है। बेटा जोश इक्कीस वर्ष का है। उसने अपनी पढ़ाई अभी-अभी पूरी की है। कुल मिलाकर एक मां, एक पत्नी और गृहिणी के रूप में मैंने अपना दायित्व संतोषजनक ढंग से निभाया। जब मैं विवाह के बाद अमेरिका गई तो यह बात मेरे जेहन में हमेशा रही कि उम्र के किसी भी पड़ाव पर मैं अपने देश लौटकर अभिनय करना चाहूंगी। अभिनय मेरा पैशन है। यह पैशन अब पूरा करना चाहूंगी। हालांकि अपने परिवार को अमेरिका छोड़कर भारत आने का डिसीजन मेरे लिए आसान नहीं था। मैंने यह बहुत बड़ा कदम उठाया है। अब यहां मुंबई आई हूं तो परिवार को बेहद मिस भी करती हूं। देर रात मैं अपने बच्चों और परिवार से बात करती हूं।

अब आप फिल्मों में किस तरह के रोल करना चाहेंगी?

मैं किस तरह के किरदार निभाना चाहूंगी, यह अभी तय नहीं किया है। मैंने एक प्रोजेक्ट साइन कर लिया है, उसके बारे में अभी कुछ बता नहीं सकती। बहुत जल्द इसकी अनाउंसमेंट होगी। अब फिल्म इंडस्ट्री बहुत बदल चुकी है। फिल्मों की कहानियां और किरदार भी बहुत बदल चुके हैं। मैं ऐसे किरदार करना चाहूंगी, जो मुझे एक अलग पहचान दे। मुझे अहसास हो कि मेरा कमबैक खास है, फ्रूटफुल है। मैंने यहां काम करने के लिए खुद को सरेंडर कर दिया है। अभी तो मैं कोरी स्लेट हूं। देखते हैं, फिल्म मेकर्स मुझे किस तरह के किरदार ऑफर करते हैं। आज की एक्ट्रेसेस फिल्मों में महज शो पीस नहीं बनतीं, उनके लिए स्ट्रॉन्ग रोल लिखे जाते हैं, फिर चाहे वो फिल्म, टीवी हो या ओटीटी प्लेटफॉर्म।

आप सत्ताइस साल बाद भारत लौटी हैं। इंडस्ट्री में आप किन बदलावों को महसूस कर रही हैं?

सबसे बड़ा और सुखद बदलाव सेट पर वैनिटी वैन का मौजूद होना है। मेरे दौर में वैनिटी वैन नहीं होती थी। धूप, धूल में शूटिंग के बाद ड्रेस चेंज करने की कोई प्रॉपर जगह नहीं रहती थी। बड़े नामी स्टूडियोज के मेकअप रूम गंदे रहते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। इस दौर की अभिनेत्रियों के लिए बहुत बड़ी सुविधा है वैनिटी वैन। स्टार के पेमेंट का स्तर भी बढ़ा है। इस तरह फिल्म इंडस्ट्री का पूरा ढांचा ही बदल गया है।

ओटीटी इस वक्त फिल्मों के लिए टफ कॉम्पिटिशन बन चुका है। आप कितनी तैयार हैं ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए, जहां नेगेटिव रोल और स्टोरीज ट्रेंडिंग हैं?

आय एम हियर टू सरप्राइज एवरीवन! मैं नेगेटिव रोल करूंगी या नहीं, यह तो रोल पर डिपेंड करेगा, अभी से कैसे बताऊं? पॉजिटिव, नेगेटिव का कॉम्बिनेशन कर सकती हूं। ग्रे शेड्स वाले रोल भी सोच सकती हूं।

आपने बॉलीवुड के कई बड़े स्टार्स के साथ काम किया, उनके साथ आपके फिल्म करने के एक्सपीरियंस कैसे रहे?

हर एक्टर के साथ मेमोरीज शेयर करने के लिए शायद एक इंटरव्यू कम पड़ जाएगा। हां, जिनके साथ मेरी बहुत बनी, वो थे विनोद खन्ना। जब वह शिखर पर थे, सब कुछ छोड़कर आचार्य रजनीश के आश्रम में चले गए, कुछ वक्त बाद वो वापस भी आए। इंडस्ट्री ने उनका स्वागत किया। उनकी वापसी के समय मुझे उनके साथ पांच-छह फिल्में करने का मौका मिला। रजनीश आश्रम से लौटे विनोद जी के पास इतना आध्यात्मिक ज्ञान हो चुका था कि उनसे बातचीत करना एक ग्रेट एक्सपीरियंस होता था। जब मेरी शूटिंग विनोद जी के साथ होती थी। मेरे पापा भी मेरे साथ आते थे, खासतौर पर उनकी आध्यात्मिक बातें सुनने। विनोद जी, मैं और पापा घंटों बतियाते थे। उनसे हमारी बहुत अच्छी मित्रता थी। गोविंदा, इंडस्ट्री के वो सितारे हैं, जो वर्सेटाइल हैं। उनसे भी हमारा बहुत प्यारा रिश्ता रहा। ऋषि कपूर जी के साथ भी मैंने पांच फिल्में कीं। वह बहुत दिलचस्प इंसान और कमाल के एक्टर थे। आज जब मैं रणबीर को देखती हूं, मुझे लगता है उनमें अपने पिता की पूरी झलक है, लेकिन पिता पुत्र में तुलना नहीं होनी चाहिए। *

भारत और अमेरिका की लिविंग स्टाइल में अंतर

यूएसए की लिविंग स्टाइल चकाचौंध भरी है। डॉलर्स में मिलने वाली सैलरी से वहां के लोगों का स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग हाई है। वहां की लेडीज काफी फैशनेबल हैं। लगता है मानो अभी-अभी ब्यूटी पार्लर-सैलून से निकली हों। फैशन, हाई स्टैंडर्ड ऑफ लाइफ वहां एक कॉमन बात है। हां, अमेरिका में रहने का मेरे लिए फायदा यह रहा कि मैंने वहां काफी कुछ जाना-सीखा, जो मैं भारत में नहीं कर पाई थी। यहां तो मैंने फिल्मों में बतौर अभिनेत्री काम किया, जहां मेकअप, हेयर स्टाइल, डांस सिखाने के लिए सेट पर लोग होते हैं। कोई सीन कैसे किया जाए, यह बताने वाला डायरेक्टर होता है। घर पर मां-पिताजी होते हैं, जिस वजह से मैं पैंपर्ड होती रही। अमेरिका में जाने के बाद अपने परिवार के लिए खाना बनाना, ड्राइविंग सीखना, अपने फाइनेंस को मैनेज करना, ये सारे काम मैंने सीखे, जो वहां के लिए जरूरी थे। मैंने वहां स्विमिंग सीखी, जो फिटनेस के लिए थेरैपी बनी, पर्सनली मेरी ग्रोथ हुई। इस तरह वहां की रूटीन लाइफ ने मुझे इंडिपेंडेंट और बहुत स्मार्ट बनाया। भारत में होती तो शायद ये सब काम नहीं सीख पाती। एक बात की कमी मैंने वहां बहुत महसूस की, वह है अपनापन। हम सबकी मदद करें, यह अपने देश की सभ्यता-संस्कृति का हिस्सा है। भारत के लोग बिना मांगे दूसरे की मदद करते हैं। अमेरिका में किसी की मदद करने का कल्चर नहीं है। यहां तक कि वहां अपने किसी दोस्त के घर जाना है तो पहले उसकी भी अपॉइंटमेंट लेनी पड़ती है। यह सोचना पड़ता है कि कहीं उनकी प्राइवेसी में हम कोई दखलअंदाजी तो नहीं कर रहे हैं। मैं भारत में अपनी किसी भी सहेली के घर कभी भी जा सकती हूं। हक के साथ कह सकती हूं, 'चल, यार एक कप चाय पिला।' मैं अमेरिका में इंडियन लाइफस्टाइल, यहां की खुशमिजाजी, मददगार लोग बहुत मिस करती हूं।